



/ 68



# चन्दा मामा

फरवरी / मार्च १९९८





**mangose** रोचक जानकारी

आम की संस्कृतिकृत से आम बनने का प्रमाण है। आम की उत्पत्ति भारत में हुई है।

वेदांग कर्म वेदों में आम की उल्लेख, यह आम वेदांग कर्म वेदों में उल्लेख है।

आम की उत्पत्ति भारत में हुई है। आम की उत्पत्ति भारत में हुई है।

आम की उत्पत्ति भारत में हुई है। आम की उत्पत्ति भारत में हुई है।

आम, क्या बात है! क्या स्वाद है! और देखो तो जरा कितने प्यारे कितने मीठे फल धरती पर है। लालचाने, खरे में ही तो हैं। रसना कैन्डीज, चाहो तो खोसो, चाहो तो मुँह में भर लो, इनकी हर बात में है एक नया स्वाद हमारी अलसी की अफार वाली कैन्डीज में तो आप हूँ लकरी हैं। अपने स्वपसन्द तैरा चाराक- राउरा (आरिआरुआरु), लूडिबेरी (लूडिबेरी) और आम (मैन्डरीन)।

मेकिंग अगर लूडिबेरी फलों के भी चलावारे करिए तो फल है हमारी और फलाने फलाने चमकी की कैन्डीज, जो कि मीठ (लेमोसायन) और खल्लास (पाइनोपिचन)।

के जगहों में भी हैं, तो आपको जीव लुट लो घुस मचा। इनकी कस ही है मिराली, ये हैं नीच, मस्ती और मनोरंजन का कामी न खल्ले होनेवाला मिलसिला।

अगर लुड सेंडर, लूडिबेरी, आम, मैन्डरीन, औरिजचरान या वेदर के बारे में कोई खस मिलकर बात जानते हैं तो हमें इस पते पर लिख भेजो।

रसना एण्टरप्राइज लि. ४ जो टुड सेंटर, स्ट्रेबियन कॉलेज के पास, बहनवाबाबा ३८० ००९

**Rasna's CANDIES & TOFFEES**

**समाचार-विशेष**  
**सौ वर्षों के मताधिकार के बाद महिला प्रधानमंत्री**

दिसंबर ८ को चीन में, जहाँ विदेशी मूलवासी की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनीं। यहाँ यह उद्घाटनीय विषय है कि संसार में सबसे पहले बने १८९१ में ही स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ।

चीन में जहाँ विदेशी मूलवासी की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनीं। यहाँ यह उद्घाटनीय विषय है कि संसार में सबसे पहले बने १८९१ में ही स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ।

स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ। यहाँ यह उद्घाटनीय विषय है कि संसार में सबसे पहले बने १८९१ में ही स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ।



यहाँ यह उद्घाटनीय विषय है कि संसार में सबसे पहले बने १८९१ में ही स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ।

यहाँ यह उद्घाटनीय विषय है कि संसार में सबसे पहले बने १८९१ में ही स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ।

यहाँ यह उद्घाटनीय विषय है कि संसार में सबसे पहले बने १८९१ में ही स्त्रीयों को मत देने का एक प्रारम्भिक प्रयास हुआ।



## मंत्र-तंत्रों की सन्दूक

मोती के व्यापारी सुरहरि के चार पुत्र थे। बड़े तीनों अक्लबंद थे। वे तीनों व्यापार में पिता की मदद करते थे। चौथा बेटा मनोहर मद बुद्धि का था। इसलिए सब लोग उसे भिन्न मनोहर कहकर पुकारते नहीं थे, मुझे मनोहर कहकर पुकारते थे। यों पुकारकर उसका भगवत् उदासी रहते थे। यों वही नाम उसका रखा ही हो गया। उसके बचपन में ही उसकी मौत हो गयी थी। इसलिए सुरहरि अपने चारों पुत्र को बहुत चाहता था।

बड़े तीनों की शादी हो गयी और उनकी प्रलिया भी ससुराल में जाकर बस गयीं। उन तीनों बहनों ने देखा कि उनका ससुर उनके परिवारों में भी अधिक मनोहर को जगहा चाहता है। वह उन्हें पसंद नहीं था। इस बात पर वे अपने ससुर से माराज थी।

सुरहरि की आशा थी कि मनोहर का प्याह कर मुँह हो सकता है, उसके व्यवहार

में तर्जनी आये। योंकि मनोहर के बारे में आसपास के गाँवों में हर किसी को खूबों मालूम था, इसलिए कोई भी उसे अपनी बेटी देने आगे नहीं आया। मनोहर की शादी को लेकर सुरहरि बहुत समय तक दुसा रहा और आखिर इसी दुख के बोझ को सह न पाने के कारण मर गया।

उस दिन से मनोहर के कणों का आरंभ हुआ। उनकी भाभियाँ उससे हर तरह का काम करवाती थीं। मनोहर को काम करना आता ही नहीं था, इसलिए वे जो भी काम उसे सौंपती थीं, वह उन्हें बिगाड़ देता था।

अपने परिवारों के बाहर चले जाने के बाद मनोहर की तीनों भाभियाँ घर के बीचों बीच समाविष्ट हुईं।

“साता सुब है, पर काम करता कुछ नहीं। क्या जब तक यह जिन्दा रहेगा, तब तक हमें ही इसकी देखभाल करनी होगी?”

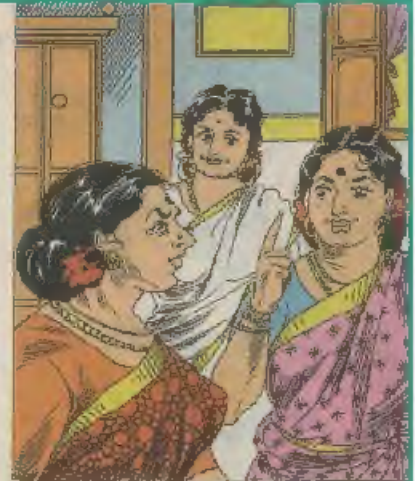
बड़ी बहन ने हाथ घुमाते हुए और दोनों बहनों से पूछा। “कोई भी वाप इससे अपनी बेटी की शादी कराने तैयार नहीं होगा। लगता है, जिन्दा भी वह कुंवारा ही रह जायेगा। किसी और गाँव में इसे घर-जोवाई बनाकर बेचने का कोई रास्ता भी दिखाना नहीं दे रहा है।” दूसरी बहन ने कठोर स्वर में कह दिया। “इस बूढ़े ने जाने-आते हमें वह जिम्मेदारी संभाली और चुपचाप लाखें बंद कर लीं।” तीसरी बहन ने जते ही रुसे स्वर में कह दिया। तीनों बहनों ने आपस में बहुत देर तक चर्चा की और अंत में इस निर्णय पर पहुँची कि इस बला को किसी तरह यहाँ से हटाना है।

उस समय पिछवड़े में पौधों को पानी दे रहा था, मनोहर। काम पूरा हो जाने के बाद हाँफला हुआ वह वहाँ आया और कहने लगा “बड़ी भूख लगी है भाभियों। खाने के लिए रोटीयाँ, दाल और लोकी की तरकारों चाहिए।”

दूसरे ही क्षण तीनों भाभियाँ अंदर चली गयीं और चटाइयाँ बिछाकर बैठ गयीं। उन्हें देखकर मनोहर डर गया और कहा “आप तीनों को क्या हो गया? क्या तनौयत डीक नहीं? पिताजी की तरह आप तीनों भी मरनेवाली हैं?”

“मुझे लगता है कि हथौड़े से कोई मेरे सिर को मार रहा है। गेहूँ के रंग के साँप के दाँत उसाड़ों और उन्हें आग में डाँत दो। उस धुएँ की सूँघने पर ही मेरा यह सिरदर्द दूर हो जाएगा।” बड़ी भाभी ने कहा।

“मे पेट के दर्द से मरो जा रहा हूँ। लगता है, पेट के अंदर भारी पाथर है।



बाघिनी के दूध से अजवाइन का सूप मिलाकर पीने पर ही मेरा यह दर्द दूर हो जायेगा।” दूसरी भाभी ने कहा।

“मेरी आँखें मली जा रही हैं। लगता है, आँखों से रेत से भर गयीं। राधासी की सींग को खून चिसका उसे कालन की तरह आँखों में लगा लूँ, तभी यह जलन दूर होगी।” तीसरी भाभी ने कहा।

मनोहर को लगा कि यानो उन सारे कष्टों को वह स्वयं झेल रहा हो। उसने बहुत हो दुख-भरे स्वर में कहा “भाभियो, ऐसे दो। अभी बाजार जाऊँगा और जो-जो चाहिये खरीद लाऊँगा।”

“वे बाजार में नहीं मिलतीं। जंगल में मिलेंगी। तुम तो जानते ही हो, तुम्हारे भाई सदा कामों में व्यस्त रहते हैं। उन्हें क्षण भर





की भी फुरसत नहीं।" कहती हुई दोनों जोर-जोर से कराहने लगीं।

मनोहर बड़े ही कोमल हृदय का था। उनकी कराहें उससे सुनी नहीं गयीं। उसने कहा, "अभी अंगल जला जाऊँगा। जो-जो चाहिये, ले आईंगा।" कहता हुआ वह निकल गया। जैसे ही वह वहाँ से गया तीनों लठ बैठीं और बड़ी भाँबी बुझी-बुझी कहने लगीं "आज रात को अवश्य ही साँप उसे दसेगा।"

"अगर उससे वह बच गया तो बाँव अवश्य ही उसका पेट चौर डालेगा।" दूसरी भाभी अमर-विभोर हो कहने लगी।

"अगर दोनों विपत्तियों से बच भी जाए तो कोई पावसी उसे निगल लेगी" तीसरी भाभी कहती रही और ठठाकर हँसती रही।

मनोहर सर्पराज, बाघ व राक्षसों को डूँछता हुआ जंगल में थोड़ी दूर गया कि नहीं, चारों ओर अंधेरा छा गया। जंगल में वह बहुत दूर तक गया, मगर वहाँ उसे सियार, खरगोश ही दिखायी पड़े, सर्प या बाघ दिखायी नहीं पड़े।

वह भूख से तड़प रहा था। उसने जोश में आकर चिल्लाया "ऐ राक्षसी, इधर मेरे सामने आ जा।" उस प्रांत में एक चट्टान पर झोपड़ी बनाकर अपनी बेटी के साथ रह रही थी मंत्र-तंत्रों की भानुमती। उसे ये चिल्लाहटें सुनायी पड़ीं। वह बाहर आयी और कहने लगी "यह कौन चिल्ला रहा है। इतना साहस? एक तो भानुमती के घर के पास आये, फिर उसपर जोर-जोर से चिल्लाये?"

मनोहर ने महिम रोशनी में भानुमती को देखा और चट्टान पर आकर कहने लगा "सामू, क्या आसपास गेहूँ के रंग के सर्प, बाघ या राक्षसी नहीं हैं?"

"मैं उन तीनों से तीन गुना बड़ी हूँ। मेरा नाम भानुमती है। अरे छोकरे, शान्त रात को यहाँ क्यों आये? क्यों जोर-जोर से चिल्ला रहे हो?" आश्चर्य-भरे स्वर में उसने पूछा।

मनोहर ने अपनी तीनों भाभियों पर जो गुज़रा, साफ़-साफ़ बताया और साथ ही पूछा कि क्या करने पर वे उन-उन विपत्तियों से बच सकती हैं।

भानुमती उसकी बातों से जान गयी कि वह बेचारा है, नासमझ है, नादान है और उसकी भाभियाँ उसे भार-बालने का चक्कर चला रही हैं।

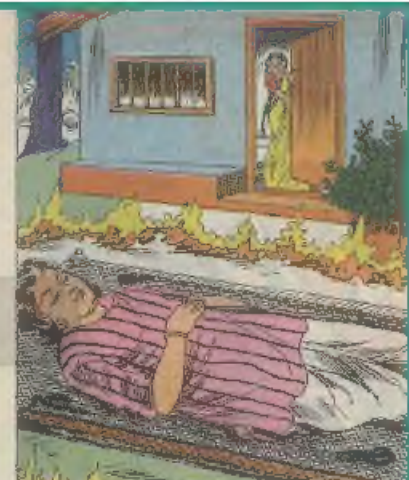
"तुम बड़े ही साहसी हो रामाव। जगता

है, बहुत भूखें हो। तुम भूख नहीं मिटाया तो साहस भी क्या पड़ जायेगा। चार-पाँच रोटियाँ खा लो" कहती हुई वह हाथ की खाट झोपड़ी से बाहर ले आयी।

फिर वह एक थाली में ज्वार की चार रोटियाँ ले आयी। थाली में कुकुरमुत्तों की तरकारी भी थी। मनोहर ने जल्दी-जल्दी खा लिया और भानुमती का दिया पानी पी लिया। फिर कहा "सामू, तुम्हारे दिलाने इस खाने के सामने गाँव की मुर्गी का मांस भी कुछ नहीं।" चुटकी बजाते हुए उसने कहा।

उसकी बातों पर भानुमती जोर से हँस पड़ी और कहा, "रामाव, वह तो मुर्गी का गोشت नहीं। कुकुरमुत्तों की तरकारी है यह। सौदवं में राजकन्याएँ भी मेरी बेटी स्वर्णमंजरी के सामने टिक नहीं सकतीं। उसी की बनायी रसोई है यह।"

झोपड़ी के बाहर हो रही इस बातचीत के कारण स्वर्णमंजरी का निद्रा-भंग हुआ। वहाँ से वह बोली "अम्मा, क्या नेपाल से फिर तुम्हारा जादूगर गुरु आ टपका? जो मंत्र तुम्हने सीखे, वे क्या काफी नहीं हैं? जादूटोनेवालों की बेटी कहकर मुझसे कोई धावो करने भी तैयार नहीं है। तुम्हारी बेटी होने के नामे जगता है, जन्म भर इसी जंगल में पड़ी रहूँगी और इसी झोपड़ी में घुट-घुटकर मर जाऊँगी।" उसकी बातों में उसका क्रोध स्पष्ट झलक रहा था। भानुमती अपनी बेटी से कुछ न बोली। उसने मनोहर से कहा, "रामाव, सुबह तक इसी खाट पर सो जा। तुम्हें जो चीजें चाहिये, उनके बारे



में कल सुबह सोचेंगे।" कहकर हाथ में रखे हुए मंत्रदंड से एक देखा खींची। तुरंत भड़कती हुई अग्नि एक फुट की उंचाई तक उठी और फैली। "उठो मत रामाव। आग देखेगा तो कोई भी जंतु इस तरफ आने का साहस नहीं करेगा।" कहती हुई भानुमती झोपड़ी के अंदर चले पड़ी।

भानुमती जैसे ही अंदर गयी, मनोहर सो गया। फिर से सोने के प्रयत्न में लगी स्वर्ण मंजरी से उसकी माँ भानुमती ने कहा "बाद सो जाना। पहले देखना कि बाहर सोया हुआ वह जवान तुम्हें पसंद आया या नहीं?"

स्वर्णमंजरी ने झोपड़ी का दरवाज़ा खोला और बाहर देखा। उस महिम रोशनी में उसने देखा कि युवक गादी निद्रा में है। देखने में बहुत ही सुंदर है और साथ ही दृढ़-घुट



भी। वह उसे बेहद पसंद आया। शरमाती हुई दरवाजा बंद करके जब वह अंदर आयी तब उसकी माँ ने कहा "श्री तुम्हारा मनोभाव जान गयी। सबने ही उस खान में तुम्हारी शादी हो जायेगी। वह उसे ही तयान हो, परंतु है, बहुत ही अच्छे स्वभाव का। नेपाल के मेरे गुरु कहा करते हैं कि एक सुंदर लड़की का विवाह किसी नादान युवक से हो जाए तो उसे उसे पूर्वजन्म का पुण्य ही कहा जाया चाहिये।" कहकर वह लोर से लैस पड़ी।

दूसरे दिन सोये हुए मनोहर को उसने खुद जगाया और कहा "दामाद, तुमने मेरी बेटी स्वर्णमंजरी से शादी की तो तुमने जो-जो मांगे, वे सब के सब तुम्हें दूँगी।"

भाभियों की तबीयत ठीक हो जाये, यही मनोहर को चाहिये था, इसलिए उसने कहा

"इतना गिरगिटने की क्या जरूरत है तब। आखिर शादी ही तो करनी है। कर लूँगा।"

भानुमती ने तुरंत पहाड़ी सड़िर में उनकी शादी करायी। फिर उसने पास के एक गाँव से बैल-गाड़ी मंगायी। जब दामाद और बेटी गाड़ों में बैठ गये तब अंदर से वह कांठ की बनी पुरानी एक बड़ी संदूक ले आयी और गाड़ी में रखी। उसने मनोहर से कहा "दामाद, अपनी भाभियों से कहना कि दहेज के साथ-साथ, उन्हें जो-जो चाहिये, वे सबके सब इस संदूक में भर पड़े हैं।" जो कहकर उसने उन्हें बिदा किया।

शाम तक मनोहर अपनी पत्नी समेत अपने घर के सामने आया। भाभियों ने तो तय कर लिया था कि वह कभी का मर चुका होगा और अपने पिता के पास मृत्युलोक में पहुँच चुका होगा। परंतु उसे दुल्हे के वेश में देखकर सन्न रह गयी। उससे साथ वधू के वेश में एक अति सुंदर कन्या को भी देखकर उनके मुँह से बात ही नहीं निकली।

गाड़ीवाले ने संदूक अंदर रख दी और चला गया। मनोहर के साथ-साथ घर में प्रवेश करती हुई स्वर्णमंजरी को उन्होंने चौकट पर ही रोक दिया और कहा "अंदर पाँच रखा तो पाँच तोह दूँगी। बीन है रो तू? हमारा देवर सुंदर और हठा-कट्टा लगा तो बस, उसे अपने वश में कर लिया और उससे शादी कर ली? बिना दहेज दिये कैसे शादी कर सकती है? यह शारी, शादी ही नहीं, मेरे देवर की बरबादी है।"

"मेरी मास ने कहा भेजा है कि आपको जो भी चाहिये, वे सबके सब उस संदूक में

है।" मनोहर ने कहा। वह सुनते ही भाभियों सोच में पड़ गयीं कि मौत से बचकर देवर वे सारी चीजें कैसे ले आ पाया।

पहले बड़ी भाभी ने बड़ी ही वातुरता से संदूक का छलन खोला। बर, गेहूँ के रंग के सर्पराज ने फूफकारता हुआ अपना फन फैलाया। वह चिल्लाते ही बली भी, किन्तु अपने को संभाला और संदूक का दक्कन बंद कर दिया। फिर कमरे के बाहर आयी। कहा "बब ब्रो यहाँ क्यों खड़े हैं? अंदर आइये।" कहती हुई उसने मनोहर व स्वर्णमंजरी का स्वागत किया।

इतने में दूसरी भाभी ने जल्दी-जल्दी कमरे में प्रवेश करके संदूक का दक्कन खोला। उसने देखा, अंदर एक बहुत बड़ा भूचर बाघ अपना मुँह खोलें छड़ा है। इस दृश्य को देखकर दूसरी भाभी बेहोश होने लगी थी, पर उसने भी अपने को संभाला और बाहर आकर कहा, "अरे यह क्या? आप दोनों खड़े क्यों रह गये। बैठ जाओ।"

तीसरी भाभी लगातार दीड़ली हुई कमरे में आयी और संदूक खोली। उसने देखा कि अंदर रोमों ने भरी काली एक राखसी अपनी

आँखें मल रही हैं और जंघाई ले रही है। यह देखकर उसे लमा, माँने इसके प्राण पक्षर उड़े जा रहे हों। पगली की तरह देखने लगी और बड़ी मुश्किल से बाहर आयी। बाहर आकर उसने मनोहर और स्वर्णमंजरी से प्यार से कहा "पत्ता नहीं, कब बाँना बाया होगा। पाँच धोकर आ जाओगे तो खाना परोसूँगी।"

मनोहर ने उनसे कहा "लगता है, बापके कह दूर हो गये। यह संदूक मेरे ही कमरे में रहेगी। मेरी मास की भेजी चीजें जब कभी भी आपको चाहिये, मैं खुद लाकर दूँगा।"

"तुम दोनों तो अभी छोटे हो। छोटे क्या कभी बड़ों को देते हैं? हम ही बड़ी जामरुकता और प्रेम के साथ तुम्हारी देखभाल करेंगे।" प्यार जताते हुए नाटकीय ढंग में तीनों भाभियों ने एकसाथ कहा।

भानुमती को मालूम था कि जब तक वह संदूक उस कमरे में होगी तब तक उसके दामाद का या उसकी बेटी का कोई भी, कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगा। वे जो कहेंगे, वही होगा। और सचमुच हुआ भी वही।





## एक हजार एक सौ सोलह

हनुमन्तरी का राजा भीतमलेन बड़ा ही विचित्र था। संसारोपक भी था। किसी भी कला में जो भी कोशल रहता हो तो राजा का दर्शन कर सकता था और अपनी कला का प्रदर्शन करके उससे पुरस्कार पा सकता था।

हनुमन्तरी का शंकर उग्रम भोटि का शिष्य था। अपने हाथों रंगीली गरी देवता मूर्तियों तथा शिल्पों से बने एक अति मनोहर देवालय की निर्माण उसका जीवन-ध्येय था। किन्तु इस निर्माण-कार्य के लिए कम से कम अठार अशक्ति की चाहिये।

शंकर ने ब्रह्मसौचा-लिखारा मिर अर्धनारीश्वर का शिष्य काले परदार पर चढ़े हो करमाधक हनु से शीला और उसे तेजस् राजा गौराभसेन के पास गया। उसके इस कलानैम्य से भरे ब्रह्म शिष्य को देखकर राजा मुग्ध हुआ और मंत्री की आज्ञा दिया "इस शिष्यी को एक हजार एक सौ सोलहसिंहा दीजिये।"

एक सौ सोलह अशक्तियों एक शैली में रची गयीं और गढ़ चोटी के खानो में लायी गयीं। गढ़ केवल शंकर बहुत ही निराश हुआ। बेचारे ने सोचा कि उसकी कला पर प्रताप होकर राजा लाख अशक्तियाँ देगे और वह मंदिर का निर्माण कार्य पूरा कर पावेगा।

गढ़ सोच में पड़ गया कि इस स्थिति में क्या करे और क्या न करे, तब चिन्तनों की तरह एक रात के प्रथम मन्त्रिण्य में चमक उठा। उठने राजा से कहा "महाराज, यह छोटी रक्तम तहो बलिष्ठ पहले आपने और कहा, उस प्रकार एक हजार एक सौ सोलह प्रदान कीजिये।"

शिष्य की काले दावा की समझ में नहीं आयी। गढ़ चोटी के तब तक सोचता रहा और फिर शंकर के नाकचातुर्य पर मुस्कराते हुए मंत्री से कहा "मैंने पहले कैसे कहा, उसी प्रकार इस महाशिल्पी को हजार एक सौ सोलह दीजियेगा।"

यह शंकर राजा से लाख अशक्तियाँ से भी अधिक धन प्राप्त कर पाया। अपने कार्यों के अनुसार मंदिर का निर्माण प्रारम्भ कर दिया।

(राजाजी)



## सम्राट अशोक १३

(विहा विनुसार की मृत्यु का समाचार पाकर अशोक योद्धा-की सेना को लेकर उज्जयिनी में निकला और पाटलीपुत्र पहुँचा। वहाँ राजकुमार युद्ध में मारे गये, जो उसे मारने पर तुले हुए थे। पिता की चिता में अग्न शबाने के बाद बड़ों की इच्छा के अनुसार उसने राज्यारोहण स्वीकार किया। तदाशिला से ज्ञात व आदेश में तुल्य की तरह आप दुर्दृष्टाई सुधि राजधानी के लगभग पर गए खाला गया। विदीया देवी के अनुसार तथा मंत्री व मंत्रिपरिषद के तौर देने पर अशोक ने एक राजकुमारी से विवाह किया। अशोक का राज्याभिषेक संभव हुआ। कुछ समय बाद मंत्री व सेनाधिपति ने अशोक से आग्रह किया कि वे कलिंग पर आक्रमण करें और उसे अपने वश कर लें। कलिंग से युद्ध करने की तैयारियाँ पाटलीपुत्र में शुरू हो गयीं। - बाद)

पाटलीपुत्र से उज्जयिनी आया हुआ इत विदीशादेवी से मिला और सविनय उसे नमस्कार किया। उसने सविनय हाथ जोड़ते हुए कहा "महारानी को प्रणाम।"

"मुझे महारानी कहकर संबोधित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपके महाराज ने खिल आनंदि मित्र से विवाह किया, वही इस संबोधन के योग्य है।"

विदीया ने बड़े ही मुदुल ध्वर में कहा।

"अमा कीजिये महारानी। महाराज ने द्वितीय विवाह किया, इसका यह मतलब नहीं कि आप महारानी नहीं हैं। राजा सदा आपके तथा अपने बच्चों के बारे में ही सोचते रहते हैं। वे इस बात को भूल नहीं पा रहे हैं कि आपने उन्हें दो बार प्राण-दान दिया। आपको व बच्चों की रक्षाने के लिए वे तड़प रहे हैं। शीघ्र वे कलिंग पर आक्रमण करनेवाले हैं। युद्ध में



जय-पराजय के बारे में कोई क्या कह सकता है ? बड़े से बड़े वीर भी इसकी कल्पना नहीं कर सकते । वे चाहते हैं कि उनके युद्ध में जाने के पहले आप और बच्चे पाटलीपुत्र आ जाएँ और वहीं बस जाएँ ।" अशोक का दिया हुआ पत्र उसे देते हुए द्रुपद ने कहा ।

उसकी बातें सुनते ही विद्विषा देवों के पश्चात दुःख में विवाद की मेघाएँ छा गयीं । उसका वदन चिंताग्रस्त हो गया । उसने उस पत्र को धीरे-धीरे पढ़ा । बाद उसकी दृष्टि अपने बच्चे महेंद्र के संघमित्रा पर केंद्रित हुई, जो उस समय एक वृक्ष के तले शांत बैठकर तालपत्र के शृंगों का गर्वोरता में पठन कर रहे थे ।

थोड़ी देर बाद उसने द्रुपद से कहा "तुम धायद जानते हो कि इस नगर में पहले अशांति थी । कोई भी सुख की गंध नहीं सो पाता था । मेरे प्रति मे हो वहाँ मुस्मिर रूप से शांति की स्थापना की । उन्होंने कितने ही न्याय व धर्मसम्मत निर्णय लिये । उन्हें नियमबद्ध लागू करने के लिए ईमानदार अधिकारियों की नियुक्ति की । उन समर्थ अधिकारियों की भुव्यवस्था के कारण यहाँ की प्रजा और मेरी संतान भी सुखी है, प्रशांत है । यहाँ के सहज प्रशांत वातावरण में, उत्तम गुरुओं के वर्षविक्षण में महेंद्र व संघमित्रा विशाभ्यास कर रहे हैं । ऐसे अबोध बच्चों को उस नगर में ले आना क्या न्यायसंगत है, जो शत्रुता, परस्परिक विरोध आदि दुर्गुणों से भरा पड़ा है । उस राजधानी में कैसे भेजें, जहाँ हाल ही में



रक्त की नदियाँ प्रवाहित हुईं । ऐसी स्थिति में अपने बच्चों को वहाँ ले आना उचित होगा ? अलावा इसके, पूज्य गुरुदेव उग्रगुप्त बक्सर उज्जयिनी आ-जा रहे हैं । उस महात्मा का दर्शन करने और उनकी सेवाएँ करने के लिए मेरे बच्चे अत्यंत उत्साह दिखा रहे हैं । ऐसा सुनकर उन्हें पाटलीपुत्र में छोड़े ही प्राप्त होगा । अधिकारों के पीछे पागल तथा ओहड़ों से प्राप्त होनेवाले सुखों के पीछे दौड़नेवाले राज्याधिकारियों के सिवा वहाँ अपने हैं ही कौन ?" विद्विषादेवों ने धीमे स्वर में द्रुपद से पूछा ।

द्रुपद कुछ उत्तर नहीं दे पाया । रुक-पकाता रहा ।

"द्रुपद, राजा के प्रति हमारा गौरव है । उनके प्रति हममें अस्वच्छस-भाव है । किन्तु





उनकी जहाज के प्रपत्तों के प्रति हममें आदर-भाव नहीं है। पाप-पुण्य से अपरिचित मासूम जनता पर पित पड़ने, उन्हें मार डालने तथा संपन्न नगरों को धमशानों के रूप में बदल देने के जलावा इन युद्धों से रखा ही क्या है। और यह पूरा हत्याकांड होगा, मेरे पति अशोक के नाम पर। इससे बढ़कर विडंबना और क्या हो सकती है। युद्धों में पतियों, पुत्रों, भाइयों को छोकर जिलाप करती हुई असंख्य उन अबलाओं की वृत्ति न दुर्बला भी कल्पना मात्र से शरीर सिहर उठता है। ये कैसे आनंददायक बटनाएँ कहीं या मारें जा सकते हैं? वधवों से पीड़ित स्त्री-पुरुष जब मृत्यु की शरण में जाने लगते हैं, तब उनके मुँह से निकलते हुए शाय वचन सह

पाये ? युद्ध सब प्रकार से तद्रूप्यक है। अतः वे चढ़ाई का निर्णय वापस ले लेंगे तो अपने बच्चों सहित पाटलीपुत्र आऊँगी। अपने महाराज को मेरा भी निर्णय सुना देना।” विदीशादेवी ये बातें बड़ी ही गंभीरतापूर्वक कहती रहीं।

“महाराज, कल्याणपूर्ति आपके इस संदेश का प्रत्युत्तर देने का अनुरोध महाराज को होगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि चढ़ाई के प्रयत्न शुरू हो चुके। विजययात्रा पर निकलने के पहले महाराज आपको एक बार देखने की आशा रखते होंगे।” वृत् ने त्रिजपपूर्वक कहा।

“मैं नहीं समझती कि यह संभव है। पर यहीं से मैं आपके राजा के कल्याण की कामना करूँगी। पाप ही की प्रभात गुफा में ध्यान-मग्न होकर प्रार्थना करती रहूँगी। वह प्रार्थना राजा की विजय के लिए नहीं बल्कि मेरी प्रार्थना होगी - उनके हृदय में विवेक व विचक्षण-ज्ञान विकसित हो, शांति भावों का उदय हो। तब इतनी दूर चले आये, इसके लिए तुम्हें मेरे धन्यवाद।” कल्याण नेत्रों से विदीशादेवी ने कहा।

वृत् ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और वहाँ से चला गया। अशोक सार्धकाल के समय पश्चिमी पहाड़ियों में अस्त होते हुए सूर्य को देखते हुए पाटलीपुत्र के राजमहल के ऊपर बिचर रहा था। पोंदी देर बाद यश नहीं आता और उसे प्रणाम किया, किन्तु अशोक मौन ही रहा। यश ने उसके मौन रह जाने का कारण पूछा। अशोक ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा “आज

एक के बाद एक दो अशुभ समाचार सुनने पड़े।”

“वे क्या हैं?” यश ने पूछा।

“कलिंग से आये हमारे गुप्तचरों से प्राप्त समाचार पहला है। यह सच है कि कलिंग के राजा वित्त वारिसों के मर गये। परन्तु कलिंग के इक्कीस परगणों पर वहाँ के अधिकारी मित्त-जुलकर एक भासक की तरह वहाँ ही दक्षता के साथ शासन-भार संभाल रहे हैं। गुप्तचरों का कथन है कि उनकी एकता अभेद्य है। अनुशासन के लिए विश्वास उनकी सेना बड़ी ही क्षतिशील है। अब रही व्यापार की बात। राजा की मृत्यु के बाद भी व्यापार में कोई दिवाई नहीं आयी। उल्टे दिन ब दिन बढ़ता, फैलता जा रहा है” अशोक ने ताराजों से कहा।

“दूसरा वह अशुभ समाचार क्या है?”

यश ने पूछा।

“हमारी प्यारी बहन विदीशादेवी ने यह कहकर वहाँ आने से इनकार कर दिया कि नब्बे बहो सालन हैं। सेरी दृष्टि में वह बहाना मात्र है” अशोक ने कहा।

“महाराज, आप क्यों समझ रहे हैं कि वह एक बहाना है। नब्बे तो मजबूत वहाँ बहुत लूथ हैं।” थोड़ी देर रुककर यश ने फिर कहा “महाराज क्षमा करें। मैं जो कहनेवाला हूँ, वह शायद आपके लिए तीसरा अशुभ समाचार होगा।”

अशोक ने क्रोध प्रकट करते हुए इस भाव से देखा, बोली, वह समाचार क्या है?



“आप जायते ही हैं कि हमारी व्यापार-नौकाएँ तरह-तरह की वस्तुओं को लेकर सुवर्ण द्वीप समुदाय की ओर गयीं। परन्तु जावा, सुमात्रा, नामो बादि द्वीपों में हमारे व्यापारी कोई वस्तु बेच नहीं सके। वहाँ की जंगल कलिंग देश के व्यापारियों के अलावा किसी और देश के व्यापारियों से कोई वस्तु खरीदना नहीं चाहती। कलिंग के व्यापारी उन द्वीपों के निवाशियों से इतने अच्छे संबंध रखते हैं।” यश ने तीसरा अशुभ समाचार यों सुनाया।

“उन तथाकथित संबंधों को जड़ से उखाड़ देंगे। कलिंग जब हमारे वश हो जायेगा तब हमारी अनुमति पाने पर ही जो वहाँ के व्यापारी अन्य द्वीपों में व्यापार कर पायेंगे। ये सारे अशुभ समाचार चढ़ाई





के भेरे संकल्प को और बढ़ावा दे रहे हैं। इन्हें सुनकर मैं पीछे हटनेवाला नहीं हूँ। ये समाचार मुझे कमजोर और बुझाईल नहीं कर सकते।" अशोक ने अत्यंत आवेश में साकर कहा। यश भांप गया कि अशोक अपनी पीड़ा तथा निराशा को इक तेने के लिए यों आवेश में बोल रहे हैं। परंतु वह मौन रहा गया।

दयानदी तट पर स्थित सुंदर नगर है तोशाली। नगर से सटकर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भीर सुंदर उद्यानवन हैं। पुराणों में लिखा हुआ है कि दयानदी सरस्वती नदी के नाम से प्रसिद्ध है। सरस्वती नदी के तट पर दधीचि नामक एक मुनिवर रहा करते थे। उसी काल में वृत्तास नामक राक्षस विषुसल होकर मानव और

देवताओं की तरह-तरह से सताने लगा। इंद्र उसे मार नहीं सका। इंद्र अश्र ध्यान-मग्न था, तभी उसे साणूय हो पाया कि तपोसंपन्न दधीचि मुनिवर की हड्डियों से तैयार बड़ापुत्र से ही वृत्तासुर की मृत्यु हो सकती है। इंद्र ने दधीचि को यह विषय बताया। परोपकार को परमार्थ माननेवाले दधीचि ने, लोक-कल्याण को दृष्टि में रखते हुए, इंद्र की आज्ञा की पूर्ति के लिए ध्यान में आर्धन होकर अपना प्राण त्याग दिया। इंद्र ने दधीचि की राढ़ को वपने बड़ापुत्र के रूप में मोड़ा। मृति के तपोवन में वृत्तासुर, इंद्र के बड़ापुत्र से मार डाल दिया गया। मानव व देवताओं की पीड़ाएँ दूर हुई। दधीचि त्वाग-धनी था। उसकी पवित्र स्तुतियों ने तोशाली की जनता को आदर्श नागरिकों के रूप में रानाया-संचारा। दूसरों की सहायता करने में ने कभी भी पीछे नहीं हटते थे। बाह्याणों की संख्या अधिक थी पर अल्पसंख्यक जैनों व बौद्धों का वे सनान रूप से आदर करते थे। सुप्रसिद्ध जैन मुनि ऋषभनाथ तीर्थंकर इसी नगर के थे। तोशाली की जनता ने नगर के बीचों बीच एक अद्भुत शिला मूर्ति की स्थापना की। तीनों मतों के धर्मावलंबी इसकी पूजा करते थे। मौर्यवंश की स्थापना के पूर्व मगध का एक शासक उस शिलामूर्ति को जबरदस्ती पाटलीपुत्र ले गया। पाटलीपुत्र पर हमला करके उस शिला मूर्ति को वापस ले जाने की कोशिश कलिंग के राजाओं ने दो बार

की, किन्तु जैन तीर्थंकरों ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा "सहनशक्ति व क्षमा-गुणों में हमें चाहिये कि हम दूसरों का आदर्श बनें। कलिंगमुनि की मूर्ति अगर पाटलीपुत्र में रखी गयी तो इसमें कोई दोष नहीं। अच्छा यही है कि एक और मूर्ति हम अपने ही नगर में प्रतिष्ठापित करें।" जन्होंने राजाओं को यों समझाया।

नयी मूर्ति की स्थापना के प्रयत्नों के अंतिम दिनों में आतिदी कलिंग राजा की अकाल मृत्यु हुई।

राजा की मृत्यु के उपरांत राज्य की शांति व सुरक्षा को सुस्थिर रखने के लिए वहाँ व्यापार और विस्तृत किये गये। कलिंग राज्य की संपदाओं की अभिवृद्धि करने में जो-ज्ञान से लग गये वहाँ के अधिकारीगण।

उस समय क्ळात् एक दिन कलिंग राज्य की सरहदों पर मगध की सेना बड़ी ही संख्या में जमा होने लगी। गुप्तधरो द्वारा यह समाचार पाकर वहाँ के नामक चकित रह गये। क्या मगध की सेना कहीं और जाती हुई मार्ग-मध्व में यहाँ रुक गयी? अथवा उनका सम्यस्थान ही अपना राज्य है? यों कलिंग के अधिकारी तीव्र रूप से सोच में पड़ गये।

इतने में मगध सेना भयंकर ग्रीची की तरह कलिंग राज्य पर टूट पड़ी। जो-जो नित्यहाय लोग उनके सामने आये, उन्हें मगध के सैनिक मारते रहे। मार्ग-मध्य में जो-जो घर दिखायी पड़े, जलते रहे और राजधानी तोशाली की ओर बढ़ते गये।

यह समाचार सुनते ही एक वृद्ध नायक ने कहा "हमें इस दुराक्रमण का इटकर सामना करना चाहिये। हमें मगध सेना





को मार भगाना होगा।"

शेष सभी नायकों ने युद्ध की पुकार का समर्थन किया। वे तुरंत अपने-अपने परगणों में जाटकर गये और युद्ध की तैयारियों में लग गये। सहरों और गाँवों में सूनाही पिटवायी गयी कि कम से कम एक व्यक्ति हर घर से सेना में भर्ती हो और अपने राज्य को शत्रु के दुराक्रमण से बचाये। उन्हें बताया भी गया कि दूसरे ही दिन वे राजधानी तोशाली पहुँच जाएँ।

इस घोषणा को सुनकर पहले प्रजा चकरायी। पर बाद अपने-अपने घरों में जो-जो हथियार उपलब्ध है, लिये और राजधानी की ओर निकली। तोशाली नगर नगर शत्रु के वश हो जाएँ तो कलिंग राज्य पूरा का पूरा पराजित हो जायेगा, इसलिए वे किसी भी शूरत में राजधानी की रक्षा करने काटिबद्ध हो गये। बड़े, जवान, बूढ़े, बूढ़ के बूढ़ राजधानी की ओर अग्रसर होते गये।

प्रशांत गाँवों से जब सब पुरुष चले गये तब स्त्रियाँ रोने लगीं। विलाप करने लगीं, जोर-जोर से आक्रंदन करने लगीं।

राजधानी पहुँचे युवकों को तोशाली के

सैनिक शत्रुओं का सामना करने की कला की भारीकियाँ सिखाने में लग्न हो गये।

कलिंग के सरदारों ने सोचा तक नहीं था कि अशोक यों अकस्मात् दुराक्रमण कर बैठेगा। क्योंकि उन्होंने आज तक मगध के विरुद्ध कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे दोनों देशों में शत्रुता की भावना बड़े। इस विषय को लेकर सरदारों ने चर्चाएँ कीं। उन सबने महसूस किया कि कलिंग की सुख-संपत्ति ही इस युद्ध का एकमात्र कारण है। मगध, कलिंग को अपने वश करके अपने देश की संपन्न व समृद्ध बनाना चाहता है। उन्हें यह भी मालूम हुआ कि विदेशों में मगध की किसी भी वस्तु की डिमंड नहीं हो रही है, क्योंकि वहाँ कलिंग से आधी वस्तुएँ ही ज़रूरी पड़ रही हैं। राज्य-विस्तार तथा ईर्ष्या ही इस युद्ध के मुख्य कारण होगे। जो भी कारण हों, कलिंग के सरदारों के पसिखा की कि अपने देश की रक्षा करेंगे, मर जाएँगे, मिट जाएँगे, परंतु मगध को अपना देश नहीं सौंपेंगे। देश की पूरी ज़तवा उनके साथ थी। अपने देश के लिए मर-मिटने वे मजबूत थे।

-संज्ञ



## एक घंटे तक

धुन का पक्षर विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे कंधे पर डालकर चलता बना। तब शव के गँवर के बेताल ने कहना शुरू किया "तबन्, मनुष्य साधारणतया रोग-ग्रस्त हो जाता है। दूसरा उसकी शारीरिक स्थिति को आसानी से ग्रहण सकता है। किन्तु उस रोग की चिकित्सा केवल वैद्यक ही जानता है और कर पाता है। परंतु मनुष्य के मानसिक रोगों के बारे में जानना किसी दूसरे व्यक्ति के बस की बात नहीं है। क्योंकि मनुष्य का मन बड़ा ही संश्लिष्ट है। हर कोई अपने अनुभवों तथा विश्वासों के आधार पर दूसरे को आँकता है। कोई अपने अहंकार व चपलता आदि गुणों को आत्मगौरव व स्थिरता मानता है तो दूसरा उसे केवल अहंकारी और मूर्ख ठहराता है। मैं यह सब तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ कि तुम इस भयानक रात्रि में इराकने श्मशान में

## बैताल कथा







आत्मान विदु न बने। तूबुर ने - ज के इस उल्हास की अस्थीकार किशो और कल 'मझागजे, बिहाय धरतें गमय अपन संलाप के लिए कुनड धी गालन' हूँ बहुत गमय तक गाता रह जाना हूँ तब मेरे रूढ़ सिंह गनुष्य इकट्ठे हो जाएँ, पक्षा पक्षी भी मरे गीत सुनते रह जाएँ ना मुझे कोई आपत्ति नहीं किन्तु केवल मनुष्यों के जीन मनुष्यों के लिए ही शान्त पड़े तो तो कहीं भी ज्यादा समय तक रहने लगा पाला एक घरे में अतिरिक्त गा नहीं पाया, इसीलिए मैं आत्मानों तक ही समित्त रह रहा सकता।

तब राजा ने आग्रह किया कि तूबुर एक धन तक ही सहें अपने आत्मान में राखे तूबुर ने स्वीकार किया

राजा ने मर्वा को बुलाकर कहा "तूबुर ताम्रक एक महान मंगीत विद्वान हमारी सभा में गाने आनेवाले हैं उनका हृद है कि न एक घंटे तक ही गा सकेंगे हम उनकी अच्छी तरह से आवश्यक प्रबंध करें जैसा आवश्यक रूप से हमारी ही सभा में व रह जायें।

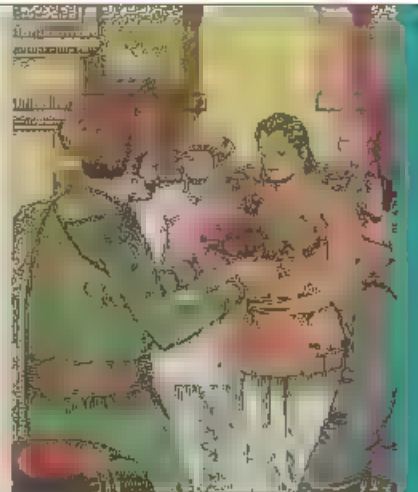
तूबुर के गान के लिए राजा गुरु पर प्रबंध किया गया तबक वैदिक के लिए गाना का केवल बिछाया गया उसपर हम तर्कियों का भी इंतजाम किया गया जब वह गायेगा तब लाजने हो लिए तब सुंदर तर्कियों का चैतन्य की राशियाँ बिना पदों केपर हिलाने-डुलाने के लिए रा चलवाना की भी निष्पत्ति हुई उस दिन तबुर के मत प्रमुख नियंत्रित किये गए। पहले ही मंत्रियों को तबना दिया गया कि जब जब वह गायेगा, तब तब वासिदों बजाते रहें मधुर कल तबों की तो

कमी ही नहीं।

गपने वचन के अनुसार तूबुर सभा में आया राजा ने स्वयं पुरुषमाला पहनाकर उसका स्वागत किया जो जो प्रबंध किये गए उन सबका निवर्तण इन के बाद तूबुर ने पृष्टा 'कोई कमा रह गयीं तो रूपया भण्डय, आवश्यक मंधार करवाकंगा'।

तूबुर ने मुस्वगते हुए कहा 'मर्गीत विद्वान का वाह्य, कम न प्रवध वह है उत्तम श्रोता।' कहकर वह सभा में गाकर निष्पत्ति आया तब आगनि हुआ और शक्ति का संबोधित करने हुए कहा 'सत्तत्वा मेरे गीत संग्रहाय बढ़ नही है, मेरे स्व मज्ञा से उत्पन्न हुए हैं। अगर मज्ञा कोई ब्रि हो जाए तो मैं स्वयं उन्हें संवार लूंगा। द्रि क्या है, वह आपमें से किसी की उम्र में नहीं आयेगा इसीलए आपमें प्रार्थना है कि मरा आत्माता में अग न डालें आप एकदम चुप रहें मैं केवल एक घंटे तक ही गाऊंगा आप रूपय आन देकर सुनें' कहकर उसने अंततः तब रूढ़ किया।

जो एक घंटा बीत गया। तूबुर ने गाला तंत्र चिया और कहा 'अपने वचन या अनुमान देने एक मंटे तक गाया, मुझ गान की अनुमति दीजिये।' कहकर वह रुक खड़ा हो गया राबो न मुस्कंठ ही उसके गान की भरपूर प्रशंसा की और अनुग्राह किया कि कम से कम एक और घंटे तक गायें तूबुर ने उनकी विमर्ती स्वीकार नहीं की फलाहार खान जो रुबा का हम पीने के बाद, राजा की दा भे स्त्रोकर कठके बहो में चला गया। अपन प्रबंध में तूबुर आकर्षित हुए नहीं होंगे,



इसीलिए चले गये जो साचकर राजा बहुत ही निराश हुआ उसन मन्ना में कहा, 'इसमें कोई संदेह नहीं कि तूबुर महा विद्वान हैं किन्तु यह निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ कि ये महा विद्वान हैं अथवा अहंकारी व चपल जित के, कुछ गुप्तचरों को इनके पीछे-पीछे भेजिये एवं घंटे में बंधिय चला गये तो यहाँ सूचना कीजिये।'।

तब न कुछ गपनेत तूबुर को पीछे करत रहे।

दश भर में यह बात फैली कि राजस्थान में तूबुर का स्वागत सकार बड़े हो पैमाने पर हुआ कितने ही राजा ने उसे अपने घर पर बुलाया और उसमे गावाकर अपने को धन्य माना। तूबुर किसी क भी घर जाने और गान से मना नहीं करता था, परंतु एक घंटे ही





अधिक कहीं भी गाता नहीं था।

बहुतों की जिद थी कि तुंबुर से एक घंटे से अधिक गवाये। यह हठ जोर पकड़ता गया जहाँ तक कि कुछ रईसों ने घोषणा कर दी कि जिस घर में तुंबुर एक घंटे से अधिक गायेगा, उस घर के यजमान को दो लाख अशकियों पुरस्कार में दो जायेगी तथा उसका वैभवपूर्वक स्वागत सत्कार होगा।

उमके बाद तुंबुर के पाँछे पीछे जानेवालों की संख्या बढ़ती गयी। कुछ रईस प्रसिद्धि पाने के लिए उसके पीछे-पीछे जाने लगे तो कुछ गरीब भी उसके साथ हो रहने लगे। उनका सोचना था कि अपने प्रयत्न में वे सफल हो जाएँगे तो गरीबी के इस श्राप से श्रावक रूप से मुक्ति तो मिलेगी। वह सबों के धरों में गाता वरन् एक घंटे से अधिक कहीं नहीं

गाया

एकलने लोग कहने रहते थे कि तुंबुर निस्वार्थो व दयाशील है। किसी गरीब के यहाँ एक घंटे तक गा जाता तो उस गरीब की गरीबी दूर हो जाती। लेकिन वह ऐसा करने से साफ़ इनकार करता था, उस से गस न डाला था, इसलिए अब लोग कहने लगे कि वह अहंकारी है, चंचल स्वभाव का है।

स्वीकारदूर में सुनाथ नामक एक दरिद्र था। उसे रागीन का बड़ा शौक था। बहुत बार वह तुंबुर के पीछे घोंक गया और पत्थरों में उसके गानों का श्रद्धा में सुनता रहा। वह बहुतों से कहना भी रहता था कि तुंबुर जैसा विद्वान अब तक न पैदा हुआ और न पैदा होगा। वह कहता भी था कि अनुकरण करना हो तो ऐसे विद्वान का ही अनुसरण करना चाहिए। ऐसे विद्वानों को चार द्वावारी तक सीमित रखना पंचवेक और अन्यायपूर्ण कार्य है। सुनाथ को वह जानकर बहुत दुःख हुआ कि हाल ही में लोग तुंबुर को श्रवकाटी व चंगन चिन्न का बता रहे हैं। नह एक बार उसने मिला और निनटन किया "महामुखा, आपका दर्शन पाकर मैं कुनार्य हुआ। यह मैंने लिए अदभुत आनंद है। आप जैसे ज्ञानी को लोग अहंकारी समझ रहे हैं। उनकी टिप्पणियों सुनकर मुझे असम दुःख हो रहा है। मेरे घर आइए और गाकर आप पर आयें। हम निंदा को सदा के लिए दूर कीजिये। वह मरी धार्थ्य है।"

तुंबुर ने उसे प्यार से नज़र से देखा और कहा "प्रजा की दरिद्रता को दूर करने

गाना ही सर्वोत्तम है। हम निम्नोदारी को कुछ समझ सकेंगे तथा उस को भी राख है। अगर कोई मुझ श्रवकाटी समझता है, तो समझने का मैं इस समय में कुछ नहीं कर सकता। मैं तो कर सकता हूँ, वहाँ कलंगा। जा मैं तहाँ कर सकता, उसके पाँछे दोनना मूर्खना ही माँबन होंगी। तुम्हारे घर में भी एक घंटे से अधिक गा नहीं सकता। तुम्हें मेरा शर्त स्वीकार हो तो तुम्हारे घर माने में मूल कार्य थापति लेंगी।"

रागीन उठा पि से जा कर सकला हूँ, कहेगा "चुन के निन गानों है। सुनाथ ने निनगलन कला। तुंबुर सुनाथ के घर गाने गया।

सुनाथ ने किसी और का अपने यहाँ नहीं बुलाया। घर में किसी भी प्रकार के प्रबन्ध नहीं किये। तुंबुर के बैठने के लिए अंचन व उच्च आमन भाव का प्रबन्ध किया, वह अपने परिवार गाँवत उसके सामन गरीठ सुनने बैठ गया।

तुंबुर ने गाना शुरु किया। खोता श्रद्धा-पूर्वक सुनने लग। ठीक एक घंटा समाप्त हो जाने के कुछ तुंबुर ने कहा "एक घंटा पूरा हो गया।

सुनाथ ने संवदना कला "कहोदय, घंटा तो पूरा हो गया। किन्तु भीत पूरा नहीं हुआ। गीत की पूर्ति व विना बीच में ही रुक जाना न्यायसम्मत नहीं है।"

तुंबुर ने आश्चर्य पर तेज़ से उसे देखा और मुस्कराते हुए तब और पटा तक लगातार गाता ही रहा। सुनाथ व पूरा परिवार आनंद में झूम उठा।



गुप्तचरों के द्वारा इस विषय की जानकारी पाने के बाद राजा ने रईसों से सुनाथ को दो लाख अशकियों विलबायी और साथ ही स्वयं भी उमे भेरे दिये।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, तुंबुर की व्यवहार-शैली अज्ञात व कटपटी लगती है। वह एकलमल नहीं बीछती। राजा ने हो अब उसे एक घंटे से अधिक समय तक गाने को कहा तो उसने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। लोगों ने बुद्धिमदुद्धा कहा भी कि यह उसके अहंकार व चंचलता का उदाहरण है, तो भी उसने उनकी परवाह नहीं की। उन टिप्पणियों पर उसने ध्यान ही नहीं दिया। (आ विद्वान सुनाथ के घर में घंटों तक क्यों गाता रहा? क्या लोगों अवशि तक गाकर वह सुनाथ का

हो लाख अशक्तिों जिलाना चाहता था ? उसे दृष्टि से भावपूर्ण गढ़ाने की उसकी इच्छा थी ? अगर यही सब हो तो मैं कहूँ कि उसने राजा के सम्मुख अपना अहंकार दर्शाया और गुलाब के पान अपनी चंचलता, मेरे इन संदेशों के समाधान जानने हुए भी चुप रह जायगा तो तुम्हारे स्मि के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे”

विजयार्क ने उमड़े सट्टेहों को दूर करने के लक्ष्य में कहा 'इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम्हारे का व्यवहार पहले से ही एकस्मान था, एक ही पद्धति में था यह स्पष्ट है कि तुम्हारे में सहानुभूति के प्रति अपार श्रद्धा थी असीम विश्वास था राजस्थान में जब यह गान गया तब राजा ने उससे पूछा कि क्या मेरे प्रसंगों में कोई कमो है तो उसने कहा कि भगीरथ विद्वान को चाहिए उत्तम श्रोता ऐसे उत्तम श्रोता का उसने मन्ताप में पसन्दा एक घण्टे तक गान के बाद वह रुक जाया था और कहता था कि एक घंटा पूरा हो गया। तब श्रोता आग्रह करते थे कि एक और घंटा गाने दे किसी ने तब तक कहा भी यह नहीं कहा कि आप गीत का आधा ही गाकर क्या

रुक गये ? गीत को पूरा क्यों नहीं करने ? इसका वह मतलब हुआ कि वे उत्तम श्रोता नहीं हैं। केवल गुलाब ही एक ऐसा उत्तम श्रोता था जिसने तुम्हारे से पूछने का साहस किया, क्योंकि वह तर्पण प्रिय था यह मन्ताई जानकर ही तुम्हारे ने लम्बी अवधि तक गाया और उसे आनन्दित किया। अब रही दरिद्र लुनाथ को रद्दमा से दो लाख अशक्तियों दिलवाने की बात इस प्रकार के लौकिक विषयों के प्रति उसके क्या विचार हैं, वह उसकी बातों से ही पकट हो जाता है वह सब दरिद्रों के घर बैठे से अधिक गार्थ और इन्हें लाखों अशक्तियों दिनरातों उनका दरिद्रता को मिटाने की चेष्टा क्यों तो यह उनकी मूर्खता ही कहलायी जायेंगे। इसीलिए उनसे कहा भी कि दरिद्रता को दूर करण राजा का कर्तव्य है, उसकी जिम्मेदारी है। इस सब विषयों की बहसों में राजा पर हमें स्पष्ट मानस हो जाता है कि निस्सन्देह तुम्हारे न ही अहंकारी था न ही चपल ?”

राजा के सैन्य शंसु में मफल नृतान शव सहित फिर फेड़ पर जा बैठा

आधार-आनन्द विशा की रचना



## गहरी चाल

भारत देश की राजनैतिकी के पैर में मोच आ गयी, क्या बिने से वह गंगा में भागे ही नहीं। राजपूतों की दवाओं का कोई असर नहीं हुआ। राजा दिन भर शासन संबंधी कार्यों में व्यस्त रहते थे। अणु घर की भी फुरसत नहीं थी। जब वे पक जाते थे तो राजनैतिकी का नृत्य देखने थे अपना मन बहलाने थे इस दैनिक कार्यक्रम में कोई भी फरक आ जाए तो उनका मन अशांत हो उठता था

क्रमशः राजा में मन-संबंधी कार्यों पर अपनी दृष्टि केंद्रित कर नहीं पा रहे थे। राजा के काम का देखकर मंत्रा पंथान हा उठा राजनैतिकी के नृत्य पर राजा के इस माह का देवकर मंत्री संकित रह गया

मंत्रा स्वयं राजनैतिकी की स्थिति का दोहन और जानने के लिए उसके भवन में जाने निकला जब वह भवन में प्रवेश कर रहा

था तब अंदर से आती हुई आवाजों को सुनकर दरवाजे पर ही रुक गया।

राजनैतिकी उत समय अपनी माँ से कह रही थी 'बेला माँ, नोक का बहाल किया और तब बिनो से बदवार नहीं गयी। वाकी नहीं। इससे राजा को मेरा मूल्य समझ हो गया। राजा अब हर दिन दरबार में हाज़िर नहीं हो रहे हैं। अपने ही विश्राम कक्ष में रह रहे हैं। और एक सप्ताह तक इस मोच के बहाने की बात में घर पर ही रह जाऊँगी तो मुझे भी चाहिये, वे दं दं मेरा इच्छा की पूर्ति मनष्य करेगे। मैं तुम्हें पहले आ वर चुकी थी कि मैं एक छोटे से परगण की शरीवारिणी बनाना चाहती हूँ।

मंत्रा की माँ बातें रती थी 'जाना नहीं वेनी क्या होगा तब मैं नवान पो तब यहाँ बनी के राज दरबारों में जाना करती थी, राजा जो भेजे तब थे, उन्हें सदाही रवीकर

विचारमाला



करके संतुष्ट रहती थी। मैं ही नहीं बल्कि  
पोख और राजनयनिकियाँ भी ऐसा ही करती  
थीं। हमारी वह पीढ़ी गुजर गयी। लगता है,  
इस पीढ़ी की नवविधियों को कला पर नहीं  
देखें।

इस - किंवा वाचन मला नीर ही  
एवढा मानू नये अशा किंवा राजनर्तकी या मध्या  
मे न आने का क्या कारण है। (वह शब्द)  
मुला का हाथ न था अशा। वह सोचत होता कि  
जिन्ना कथा में था और कहा "महाराज,  
जिन्ना राजनर्तकी ने नर्तकी का हात पकड़ा,  
उनका कहना है कि वह दो - तीन और हाथों  
नक वाच नहीं पायेगी अतः शाम के समय  
आपके मन को आह्लादित करने के लिए एक  
श्रीरत्न पकटा का प्रेम्त किया।" कहकर  
वह बदल गया और कमा के कोने में पड़े  
भोजन की सामग्री ले आया

राजा ने निरुत्साह-भरे स्वर में कहा “यह खेल तो मैं जानता ही नहीं”।

“महाराज, मैं सिखाऊँगा। प्रयत्न हो तो कौन-सा काम असाध्य है ? कोई ऐसी विद्या नहीं, जो सीखने पर सीखी नहीं जा सकती। महाराज, जो खेल खेलना है, वह यों है।”

बाग़ पर चाल चानाय बह थी गहरी बाज ।  
 यह खेल मनुष्य की श्भा को शक्ति देता है  
 उसे और पैना कतना है " यही न थी बड़े  
 जै प्रभावशाली टंग में शतरंज की खिन्नियों  
 पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला

[illegible]

यह समाचार पाकर राजतन्त्री की सी ने ब्रह्म भर त्वक में अपना लगी व कहा मैं तुम्हें पहले ही सावधान किया था तुमने तो अपने पैरों पर लक्ष्मी का मान ली। इस दुर्दशा का कारण तुम्हारी दुराशा है।



समुद्रतट की यात्रा - 27

## हरित द्वीप

वर्णन , मीमांसा प्रकरण • चित्रपत्र गीतानुसंग

अंधमान मे चार मुख्य द्वीप समूह हैं। उत्तरी पट्टे, दक्षिणी और मध्य अंडमान।  
उत्तरी अंधमान क काफी नजदीक दो सिजन टापू हैं। बैरत भाग मारक/डाय,  
जो कि ज्वालामुखियों द्वारा निर्मित हैं। बैरत टापू का अंडमानों नाम है  
महाद्वारकाना यानी धुंधलासा टापू। चार एक ज्वालामुखी है जो समुद्र मे से  
सोई 800 मीटर उंचा उठता है। भारत अब यह एकनाई भंडेय ज्वालामुखी  
है। पूरे 200 वर्ष शांत रहने के बाद यह 1991 ई. में पछां दर. मारक/डाय  
ज्वालामुखी हो गई, अगर बहा हुआ।

पोर्ट कैंसर जो कि एपोकालिप्टिक के इस स्वर्ण की राजधानी है दक्षिणी अफ्रीका में है। समुद्री तट पर यहीं आकर ठहरने हैं। जहाँ जहाज इसके मुख कदरगाह बड़ा है पहुंचते हैं। तो इंग्लिश उसका स्वागत करते हैं। उनकी मजदूर सड़ककूद यात्रियों का मन मोह लेती है।

पोट ब्लेदा का नाम अंग्रेज सर्वेक्षक आर्चीबाल्ड कोषा के नाम पर रखा गया था। उसी ने 1789 में ईस्ट इंडिया कंपनी की बस्ती बसाने के लिए यह जगह चुनी थी।

1942 में इन द्वीपों पर जापान का कब्जा हो गया था उसी वॉर में 1943

के दिसंबर में सुभाषचंद्र बोस यहां आये थे और उन्होंने अंबमान को 'शहीद द्वीप' और निकोबार को 'आजाद द्वीप' का नाम दिया था. जापानियों ने अपने कटेरे में शासननराल में यहाँ सीमेंट के जो लघुघर (बंकर)

श्री ३ साधक + सेल्युलर फोन, जिसमें साधारण-बंदू तथा अन्य जनक प्रतिनिधि दीर्घ गाल तक कीद रहे.



बनाये, वे आज भी मौजूद हैं। उन्होंने अनेक फलों व सब्जियों का प्रवेश यहां कराया अब भी यहां के कई बाशिरे घड़ल्लो से जापानी बोलते हैं।

भारत के आन्ध्र प्रदेश के बाद बहुत-से भारतीय पोर्ट ब्लेयर में आकर बस गये। उनमें १४५३ नहीं गढ़वाल बंगालियों की थी, उसके बाद तमिलनाडुियों की। मगर यहां की आम भाषा हिंदी है।

पोर्ट ब्लेयर में सबसे बड़ा नगर स्थान है - लेफ्टिनेंट जेम्स। इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि उसमें बिप्ल 'सेल' यानी कोठरियां हैं - यूसी ६९८ कोठरियां !!

इसका निर्माण अंग्रेजों ने १८८६ से १९०६ के बीच में किया था, उद्देश्य था भारत के एसों कैदियों को यहां रखना जो ब्रिटिशों की नज़रों में खतरनाक थे। खुनी अपराधी ही नहीं, अनेक देशभक्त क्रांतिकारी भी इन कालकोठरियों में रखे गये थे। उनमें से कई तो यहां से रिहा नहीं लौटे।

पोर्ट ब्लेयर का लेफ्टिनेंट जेम्स के सबसे लकड़ी-खिरई कारखानों में से है। हट्टों में इसके शोल्म में लकड़ी के नायाब नमूने देखे जा सकते हैं।

हैंस आइलैंड पहले यहां के अंग्रेजी प्रशासन का मुख्यालय था, वह पोर्ट ब्लेयर से कुछ ही कि.मी. दूर है। एक बार यहां भूचाल आया, जिसके बाद इसे खाली कर दिया गया।

पोर्ट ब्लेयर से २६ कि.मी. दूर चिंडिया बंदरगाह है, पक्की-शुभिया का स्वर्ण समुद्रकिनारे। यहां बनारसी पाहोरा के घोंसलों की भरमार है। इन घोंसलों का रूप बड़ा स्वादिष्ट भाना जाता है। उन्हें बंदोबान के लिए पोच (चर्म) व दूसरे देशों से लोग आते थे। स्वयं ही वे यहां के मूल निवासियों को पकड़ कर ले जाते थे और

एक और परिवार



मिकोयानो जीपकी

नृत्य करने मिकोडारी

गुलामों के रूप में बेच डालते थे। इस कारण यहां के मूल निवासी बाहरी लोगों से डरने और डेरे करने लगे।

बाहरवालों से सबसे ज्यादा दुश्मनी रखने वाली स्थानीय जातमें जातियां हैं - जारवा

और मोंटेनरी। जारवा संख्या में २०० के करीब हैं और ज्यादातर दक्षिणी और मध्य अंडमान के पड़ोसी जातों से हैं। वे शिकार पर जीते हैं और उनका रहन-सहन अभी भी प्रारंभिक युग के आदमियों जैसा है। मोंटेनरी उत्तरी मोंटेनेस द्वीप के निवासी हैं। वे किसी बाहरी व्यक्ति को अपने पास नहीं फटकने देते। विश्व के सबसे अलग-थलग जातों में उनकी गिनती होती है।

अपने काम से पुरा हुआ एक आदिवासी

आगे जाया की संख्या लगभग कम होती जा रही है। वे बहुत श्रद्धालु हैं। कंधुगाम सभुंदी जलधारा के घाट रहते हैं। वन में औरत-पुरुष दोनों फिर मुंडाये रहते हैं और चमड़े व बदन पर चिकनी गिट्टी पोतते हैं। वे कंकड़े की बेलसी से बने पाहूपा व तबखु पीने हैं।

अंडपारी धुगुगु गीवर छह कर खेतों-बागों का काम लगे हैं। यहां दो बारा मुख्य मंत्रजालियां आबा मांडमली आगे और अंडमाली मोंड्राला वाली हददी नन्त की हैं।







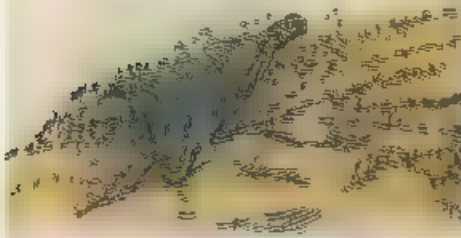
होमपेन में और बच्चा

शोषित निकोबार के सबसे दक्षिणी टापू ग्रेट निकोबार को घन जंगल में गहरे शहर के बड़े ही शौकोन होते हैं। छत्ते से शहर निकलने से पतन ये किसी बूढ़े क पत्नी को मुँह में चबोकर उसका रस खाते शरीर और चहरे पर लगा लेते हैं। जिसके मधुमक्खिधा इन्हें डक नहीं मारती।

ग्रेट निकोबार के पश्चिमी तट पर मेगापोड द्वीप है। मेगापोड नाम का दुर्लभ पक्षी यहाँ घोंसला बनाता है।

ग्रेट निकोबार का सबसे दक्षिणी ओर पिम्पेलियन पॉइंट कहलाता था। अब उसे इंदिरा पॉइंट कहते हैं। हवेलीशिपा का सुभाषा द्वीप 184 में सिर्फ 150 कि.मी. दूर है। यह जलमान-निकोबार द्वीप-समूहों का ही नहीं बल्कि भारत का भी सबसे दक्षिणी शीर है। यहाँ समान्त लेवें है। इसकी समुद्रतट की पान्न

मेगापोड पक्षी



अब मैयाग ह तहान एक तौर आकषक तथा शाववशक धरा क लिए यह बाजा मंगल होगी कर्नाटक और तमिलनाडु की सबसे बड़ी नदी कावेरी के रस-मंत्र हमारी यह कावेरी-राजा नमस्की 1998 में आरंभ होगी और भारत की तटिय राप की लैब्रलाका का अंग होगी

अंजमान द्वीपों से टैन डिग्री चैनल नाम की समुद्री जलाशय। यह चैनल इस समुदाय है निकोबार द्वीप समूह में टैन डिग्री चैनल को विश्व की सबसे खतरनाक समुद्री जलवाग्रा में गिना जाता है। एक दूसरे से सिर्फ 105 कि.मी. की दूरी पर होते हुए भी इन दोनों द्वीप-समूहों की वायुमंडलीय में कोई घेल नहीं है। निकोबार द्वीप काफी छोटे हैं। 19 में से सिर्फ 12 में लम्बी है। इनमें से सबसे बड़ा है ग्रेट निकोबार। सबसे अधिक विमानिक है नानकोगे, और सबसे उत्तरी द्वीप कोर निकोबार सबसे घना वना हुआ है।

कोर निकोबार फ्लाईंग डुलाका है। इसमें दो आदिम जानियां निकोबारी और शोषित रहती हैं। दोनों मंगलाय नल की हैं और बाह्य-वालों से भिन्नता रखती हैं। निकोबारी लोग कंधा पर गुदलनुषा झोपड़ियां बनते हैं। जिसमें मनुष्य के लिए सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।



## भूलकड़ विशाल

शुष्कपाट नामक शीत में बगबाय रहता था। उसके बाद होते थे। विशाल उसका आखिरी बेटा था। बाकी तीनों ने अच्छी शिक्षा पायी और सुस्थिर जीवन बिगाने लगे। विशाल अच्छी तरह पढ़ लिख नहीं पाया। इसका कारण था उसका भूलकड़पन।

जो भी पढ़े, विशाल बिल्कुल भूल जाता था। यह उसका लज्ज गुण था। कबल पढ़ाए में ही नहीं, अन्य कई विषयों में भी उसका यह भूलकड़पन बना रहता। दोस्त म मिलना रहता तो भूल जाता था कि चोर कौन है? खेतों में लहने हा जाता तो भूल जाता था भूल जाता था। खाना खा लेता तो भूल जाता था कि मैंने खाना खा लिया। माँ बुलाती तो जाता और दुबारा खाना खा लेता था। पैरों देका दुकान भिजवाते तो भूल जाता कि कौन से चाय खरीदने के लिए उसे जाना गया। जो सूझता खरीद लेता, पर उसे याद

नहीं रहता था कि खानने में मारोता। माता पिता धनन जगदल बने के बारे में बहुत ही धिनिन रहता था। साथ रहकर दन्तात बन्तात तरह पलाया। पर उसकी याददाश्त पर कोई अनर नहीं पडा। नमक मिर पर नीलू का रस या तिनोड़ने रहने थे। फिर भा भूलकड़पन मेमा था। वेना हा रहा मररररर राहा स मिलाया परन कोई थ पदा नर हा।

विशाल अब पंद्रह साल का हो गया। माता पिता उसकी इस स्थिति को देखकर बौल दुखी होने लगे। विशाल के तीनों बड़े भाई बहुत ही अच्छे स्वभाव के थे। उन तीनों ने अपने माता पिता से कहा "हम सुखी हैं बीस एकड़ो की पूरी जमीन हम विशाल को दे देंगे। हम किसी प्रकार की आर्थिक सहायता आपसे नहीं मांगेंगे। हम जी-जान से मेहनत करेंगे और अपने पैरों पर खुद खड़े हो जाएंगे।



अपने दोनों परेशान मत होइये " वे धीरे अपने माता-पिता को हड़स बंधाते थे ।

किन्तु विशाल के माता-पिता अपने उन तीनों बेटों से कहा करते थे "भुलकड़ के पास कितनी भी संपत्ति क्यों न हो, क्या फायदा । उसे छोटा देना बहुत बामान है । हम अब तक चिन्ता हैं, जब तक हम उसकी देखभाल करेंगे । पर हमारे घर जाने के बाद आप तीनों भी कब तक उसकी देखभाल करेंगे तुम्हारी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी बढ़ेंगी । बड़े हो जाने के बाद अपने को कुछ संभालना चाहिये । भला कब तक कोई किसी और पर निर्भर रह सकता है ?"

उसी दौरान एक योगी उस गाँव में आया । विशाल के माता-पिता को मार्कम हुआ कि किसी भी प्रकार की समस्या का हल निकालने

में वह योगी समर्थ है । तो वे उस योगी से मिले । उन्होंने विशाल की स्थिति पर प्रकाश डाला ।

'अपने अट का एक बार मेरे पास ले आइये । मैं देखूंगा कि उसके भुलकड़पन को घटाने का क्या कोई उपाय है ? यह संभव है या नहीं ' योगी ने कहा ।

दूसरे दिन विशाल अपना पिता समेत योगी के पास गया । योगी विशाल को लेकर पास हो वे फूल के एक पौधे के पास गया । उन पौधों में मीने फूल थे । उन्होंने काँटा तो भरी हुई थी

योगी ने विशाल से कहा "कूल बागह फूल तोड़ो काँटे न चुभे मावधानी बरतते और ताड़ो । तुम्हारा भुलकड़पन घर जाए, इसके लिए एक अच्छी दवा सुझाऊंगा ।"

विशाल आम फूल तोड़कर ले आया और योगी का दिया वह भूल गया कि योगी ने कितने फूल तोड़ने के लिए उम्स कहा था । फूल तोड़ने समय उसने सावधानता नहीं बरती इसलिए उसकी उँगलियों में काँटे चुभ गये थोड़ा सा खून भी बह गया ।

'ब्रह्म रे, जहाँ चुभ गये मैंने तुम्हें सावधानी दी किया था, फिर भी तुमने सावधानी नहीं बरती । तिससे तुम निपत्ति में पड़ गये । इस पौधे के काँटे की लोक में विश्व होता है । परन्तु वह विश्व अपना प्रभाव सुरक्षित नहीं दिखाना । महा चर्चितसा न प्रगने पर एक मल ही के अंदर तुम रांग घुम्ता हो जाओगे और अपना प्राण खो डालोगे"

विशाल ने दृष्टी होत हुए कहा 'आपको पहले ही मुझसे यह बात बताना था और

सावधानी से काम लेता आप जानते भी हैं कि मैं भुलकड़ हूँ, फिर भी आपने मुझसे फूल क्यों सुझाये ?"

योगी ने कहा "अब उन बंकार बानों को छोड़ो मैं नम्हें दस गोतियों दूँगा हर दिन सोचने करने के बाद दोनों बन्त एक एक गोती मूँह में बाल लगा । तुमन आम फूल तोड़ो । उन आठ फूलों को सापेकाल शिव के मंदिर में देना । या पौंच दिनों तक हर दिन आठ फूलों के हिमाव सं शाम को शिव के मंदिर में दले रहना । आगे से इस बात को याद रखना कि तुम्हारा उँगलियों से काँटा न चुभे ।"

'योगावर, मैं तो भुलकड़ हूँ । य मारी बातें मेरी मानाजी से कहियेगा वह सभालेगी ' विशाल ने उपाद बतलाया योगी ' १ ' के प्राव में अपना मिर चिन्ताते हुए कहा "अगर यह बात मुझ और तुम्हारे अलवा तीसरे व्यक्ति का मार्कम हो जाए तो वैद्य पदवी काय में नहीं आयगी उपयोगी मिद्ध तर्का हागो सब कुछ तुम्हें ही करना होगा फिर कभी बताऊँगा कि तुम्हें और क्या क्या करना होगा । उसके बाद तुम्हें भी पूछना नहीं चाहिये कि आगे मुझे क्या करना चाहिये । यह बात अक्का तरह याद रखो ।"

बाद उसने विशाल को उसके माता-पिता के मूर्पुर्द किया । वे तीनों वहाँ से चले गये ।

तीन पौंच दिनों के बाद विशाल अपने माँ बाप के साथ योगी के पास आया और कहा "योगावर आपने जो भी कहा, बिना घले सब कुछ किया आप बनाइये कि अग्रे मुझ क्या करना है और यह भय का दुः कीजिये ' 'अब हबको सब कुछ मार्कम भी हो



जाए, तो कोई बाल नहीं बलाओ कि तुमने क्या क्या किया ?" योगी ने पूछा ।

"हर दिन दोनों बन्त खाने के बाद आपकी दी हुई गोलियाँ खाता था । यो मैंने पौंचो दिन किया । हर दिन आठ फूल तोड़ता था और शाम को शिव के मंदिर में दे आता था । एक भी बार काँटे नहीं चुभे ।" विशाल ने बताया ।

"शिवधन पौंच दिनों के पहले मैंने ही ही बाने इसे बतायी और नन्हे अच्छी तरह से याद रखकर यह उन्हे आमल में ले आया । अब आपके विशाल का भुलकड़पन दूर हो गया है न ?" योगी ने पूछा ।

बाद योगी ने, विशाल के माता-पिता अच्छी तरह से विषय जानने इसके लिए स'ब'वर्णन यो बताया "भगवान सब मनुष्या



को समान रूप से शक्ति प्रदान करते हैं' परंतु कुछ सुस्त लोग उसका द्रव्ययोग सफल रूप से नहीं करत। हर काम के लिए वृत्तों पर ही निर्भी रहते हैं। वे तभी जानते कि ऐसे सुस्त की सहायता करके उसे कितनी हीन पट्टी करा रहे हैं। इस उद्यम में आदर्शव्यक्त आध्यात्मी न बरतकर बड़ा हीनो पर अधिकार में पड़ताते रहते हैं।

विशाल अजयमद है, लोक सुस्त है  
इसलिए उसने भूलकहपन की अपनी भादन  
कमायी । तबसे ही काँह  
गन्त कौचन गन्तवा बनन सन।  
चाँहें । दोहने की अपार क्या दिखाने नगन  
है। लेना में हार भी जाए, वह कहे मुकाम  
मनसुस नहीं करता । उसकी बहरने पूरा  
करने के लिए उसके भाई या माता पिता  
हमेशा मौजूद रहते हैं। मैं उसे बुलाकर  
खाना खिलाती हूँ । जब विशाल की लगा  
है भूलकहपन उसकी ज्ञान भी ले सकता  
है, तो उसमें भय सपन्न हो गया और उसकी  
याददास्त अबदुस्त रूप से काम करने लगी।

मैं इस बात की परीक्षा लेकर चाहता था कि सचमुच दसमे वृद्धि का लोप है या सस्ती

की भावना पढ़ जाने के कारण, मैं बस  
 व्यवहार में रुक रहा हूँ। अक्सर जान बूझकर  
 'कुछ' या 'कुछ' बोलता हूँ। मैं नहीं जानता कि  
 ज्ञान के ज्ञान ही मैंने इन पाँच दिनों में  
 अपने प्रणयों में ही जीने दोये। अब मालूम  
 हो गया कि इसकी याददाश्त में कोई चीज  
 नहीं है। आगे भी इसका मूलकदम नहीं  
 रहा तो विशाल के हिस्से की भीत एकड़ की  
 जमीन भी इसके आइनों में डूब जायेगी।  
 मैंने ठहरे कि आगे वह अपने आइनों की  
 मदद पर ही निर्भर रहे। पूर्ण आकाश  
 का दाँत की सोच को अपने दिमाग में  
 लटकाए। मैंने अपने के विशाल के आइनों में  
 कर लिया ही

विशाल ने तुरन्त कहा "मेरा हिस्सा तीन एकड़ ही क्यों ? मेरे हिस्से में पाँच एकड़ आते हैं"।

योगी ने चुटकी बजाकर हँसते हुए कहा  
 "आपने देखा कि आपका क्षेत्र विशाल था।  
 सुस्पष्ट रूप से भाजूम है कि उसके तलम में  
 कितनी जमीन आती है।"

तदनंतर भुलकृष्णन ने विशाल को कभी भी रुने का प्रयत्न ही नहीं किया ।



49

ये अंग्रेजों से लड़ें-भिड़ें

कंगल यमा

५४८ श्रीमत्तारा + विन्न गीत्युं

कौन वर्षों को एकादश ज्ञान भी बना जाता था प  
बहुजन राज्य के छोड़ें राजस्थान थे १९५५ में  
राजधानी पृथ्वी से बिलानाथ खबर पायी.



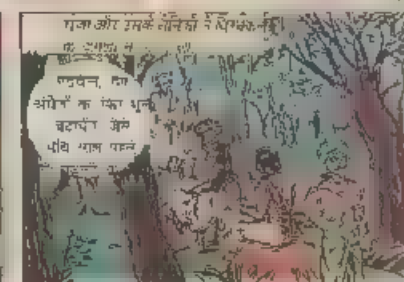
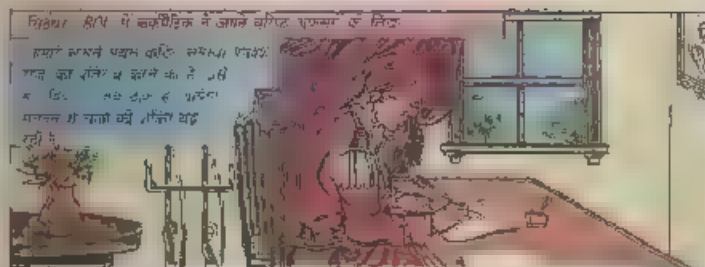
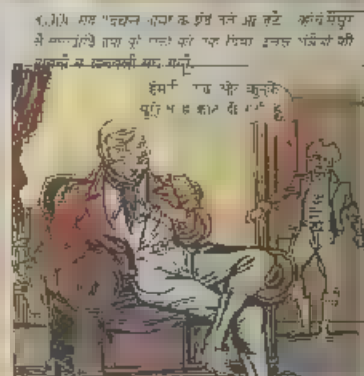
राजा महाराज की मूर्ति का रंग से दल  
जान का शरीर गवगव करने आरंभ  
होने लगी की मूर्ति और नैसर्गिक  
संगति के का रंग बिरंग मूर्ति



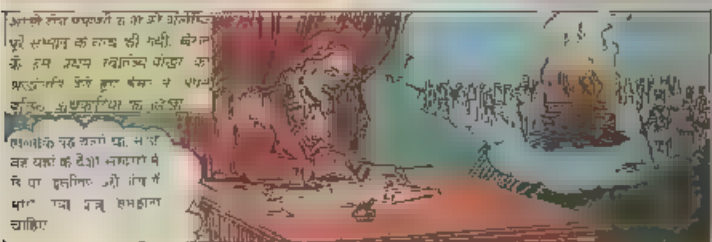
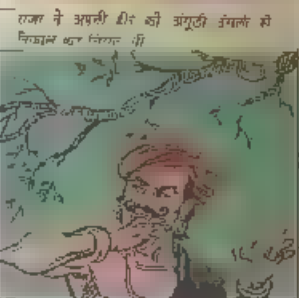
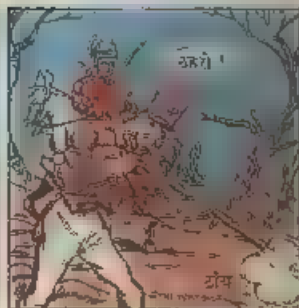
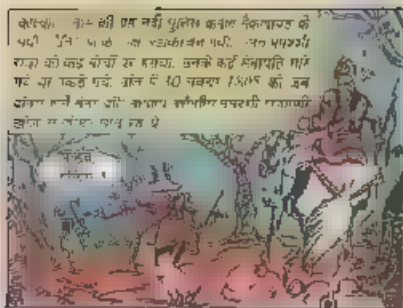
मान का मान धुल है, ज्ञान में देल जनी का अगे  
अद्वे में निकल होवे लगि सीग गला पदधारा के  
सिनको ने यम कथ हैन किया

अरे 'रात' के ऐनिक था  
गले इन्हें तो न बांधा  
फाटा है, न जोड़ों का,









कुरुक्षेत्र द्वारका चला गया। उपप्लव्य में धर्मराज, विराट तथा अन्य राजा युद्ध की तैयारियां में लग गये। विराट और द्रुपद ने सब मन्त्रि राजाओं को समाचार भिजवाया कि व सबके मन मन्त्री, ऋषि व मित्रों को लेकर तुरत निकल पड़े। यह समाचार पाते ही सबके सब राजा उपप्लव्य पहुँचने लगे। इनमें से कुछ एक राजा थे, जो पांडवों को चाहते थे, उनकी सलाहों को न्यायसंगत मानते थे। उन सब राजाओं को भली भाँति याद आ गयी कि कौरवों ने पानवों का खोखा दिया। 'तुम' में हरतर उनका मन कर आन लिया। पांडव वचन बढ होकर अनेकों नम्र संज्ञाएँ हुए पूरा किया। अब अपना राज्य वापस माँगा रहे हैं तो कौरव उसे देने से इनकार कर रहे हैं, जो बहुत ही अन्यायपूर्ण है। अतः कौरवों के विरुद्ध लड़ने के लिए उन्होंने कोई आवाकानी नहीं की। कुछ ऐसे

राजा थे, जिनके हृदय में विराट व द्रुपद के प्रति भाव की भावना थी। धृतराष्ट्र के पुत्रों को जब श्रात हुआ कि पांडव युद्ध की तैयारियां कर रहे हैं, सेना इकट्ठी कर रहे हैं तो उन्होंने भी अपने मित्रों को आह्वानित किया। जो कौरव-पांडवों के युद्ध के समाचारों ने भिन्न-भिन्न देशों में तहलका मचा दिया। बड़ो-बड़ो सेनाओं की बहल-महल से भूमि धरा उठी। पहले से ही निश्चिन्त निर्णय के अनुसार युद्ध में अपने पुरोहित को कौरवों के पास भेजते हुए उससे कहा "तुम प्रभावान हो। तुम्हें अच्छी तरह से मालूम है कि धृतराष्ट्र और धर्मराज कैसे कैसे स्वभाव के हैं। धृतराष्ट्र जानते हैं कि कौरवों ने पांडवों को किस प्रकार खोखा दिया। विदुर मन्त्रा भी कर रहा था, पर उसकी बात को अनुसनी करके अपन पुत्र की इच्छा की पूर्ति के लिए धृतराष्ट्र ने, धर्मराज



को कुछ धन के लिए बुलवाया। पांडवों को राज्य न लीप्त के रहने निर्णय हो लिया। तुम वृत्त एक बनाओ कि धर्म क्या है। त्याग क्या है? फिर तुम्हारा समर्थन करेगा। तुम्हारे पक्ष में खड़े होंगे। तुम पांडवों की अच्छाई और कौरवों की बुराई पर जोर देकर बोलो। हो सकते हैं। तब उनके पक्ष के लोग अधर्म के विरुद्ध उठ सकें। त्रिविक्रम, किसी निश्चय पर अट पायें। इस प्रकार उनमें भेदभाव लाओ। यही तुम्हारा प्रधान कर्तव्य है। दुर्योधन से तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं। तम मित्र वृत्त ही नहीं हो, बल्कि रक्त में भी बड़े हो।”

इपद का पूर्ण हित अपने शिष्यों को लेकर इस्तिरापुत्र निकला। बाद पांडवों ने और राजाओं के पास दूत भेजे। किन्तु अर्जुन स्वयं

कुम्भ न मिलन गया। गुप्तचरों के द्वारा पांडवों के सज्ज में पूरी जानकारी पाता रहता था। दुर्योधन। उसे ज्ञाता भी कि शायद कृष्ण पांडवों को वचन देगा और उनके रक्ष में रहकर लड़ेगा। इत उमन श्री कृष्ण से मिलने और उसकी सहायता मांगने का निर्णय लिया। उसका समझना था कि कृष्ण थाने ही रांडवों की सहायता क्यों न करें। इससे कौरवों को कोई नष्ट पहुँचाने वाला नहीं है। अच्छा इसमें मैंने कि उसमें एक बोल मिलन तु और महायत्न माँग लूँ, तो कृष्ण शिष्य में वह नहीं कहें। मकलता कि कौरवों ने मेरी सहायता नहीं माँगी। इसीलिए मैं पांडवों के पक्ष में लड़ रहा हूँ। उसका दाम मिलन केवल औपचारिक था। वह भी अपने परिवार के कुछ सदस्यों को लेकर द्वारका पहुँचा। अर्जुन और दुर्योधन ने एक ही दिन द्वारका में प्रवेश किया।

दोनों जब कृष्ण के घर पहुँचे तब कृष्ण सो रहा था। कृष्ण के सिंहासने एक उच्च आसन था। दुर्योधन सीधे वहाँ आकर उसमें बैठ गया। दुर्योधन के पीछे ही आया अर्जुन। कृष्ण के पीछे के पास बड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद कृष्ण तीर दे गंगा। पहल अपने पैरों के पास लड़े अर्जुन को देता और फिर देखा दुर्योधन को, जो उसके सिंहासने बैठा था। उसने दोनों में कुशल प्रश्न पूछा और आदर सत्कार करने के बाद दोनों में पूछा कि किस काम पर आये?

दुर्योधन ने मुस्कुराते हुए कहा “कृष्ण, हमारे बीच जो युद्ध होना चाहता है। उनमें में पक्ष में युद्ध करने पेरी मजबूत करो। तुम्हारे लिए हम दोनों एकसमान हैं। हम दोनों तुम्हारे

एक ही प्रकार के बंधु हैं। अतएव इसके, मैं ही पहले तुम्हारे पाम आया हूँ। मेरी सहायता करना ही तुम्हारा धर्म है।”

कृष्ण ने कहा “हो, अथवा ही तुम्हारी पहले आय। परंतु मैंने पहले देखा, अज्ञान को। इसलिए मैं तुम दोनों की सहायता करूँगा। अर्जुन पक्ष में तुमसे छोटा है, इसलिए वह पहले पूछे कि रम क्या चाहिये। मूल जैन बोद्धा में पाप बल लाक्ष है। वे खतरा लहेगे तो वे दूसरी तरफ। परंतु जो, मैं स्वयं युद्ध नहीं करूँगा। केवल मलाह दूँगा। उनमें से तुम जो चाओ, माँगा।”

अर्जुन ने कृष्ण को बुना दम लाख गोपान घोड़ाओं का दुर्योधन ने चुना। वह अपने आप इस बात पर खुश हो रहा था कि मैंने इतना बड़ा मंता की सहायता मिलनवाला है। और अर्जुन का केवल कृष्ण की सहायता वह भी सलाहों की सहायता। बाद वह बलराम से सहायता माँगने गये।

बलराम ने दुर्योधन से कहा “पूज, मैं जब विवाह में गया मैंने बंदा बनकर गया था तब मैंने तुम दोनों पक्षों को समान मानकर वचन की। किन्तु कृष्ण मेरे अभिप्राय से राजमन नडा हुआ। मैंने इसी समय निर्णय ले लिया था कि मैं किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं करूँगा। अमल में तुम्हें किसी की सहायता की क्या आवश्यकता है? जाओ और युद्ध करो। छात्र्य होने के माते अपना धात्र्यम निभाओ।”

दुर्योधन के आनंद की सीमा नहीं रही। वह बलराम के गले लगा और उसे लगा भी कि उसकी विजय निश्चित है। फिर वह वहाँ से कुतवर्मा के पास गया। उसकी सहायता



मागी कुतवर्मा ने दुर्योधन के एक अश्वोहिनी मंता दी। वो दुर्योधन अपना काम पूरा करके हरितनागपुर लौटा।

दुर्योधन के ज्ञान ही कृष्ण ने अर्जुन से कहा “मैंने ता कत दिया कि मैं युद्ध नहीं करूँगा। मुझे कुनकर नमने मरी बड़ा मंता क्या खा दी?”

अर्जुन ने कहा “तुम अकेले ही इस सेना को जीत सकते हो। सब शत्रुओं को मैं अकेले जीत सकता हूँ। तुम युद्ध करोगे तो मपूर्ण कीर्ति तुम्हीं पाओगे। फिर मैंने लिया क्या बच जायेगा?” मैं कीर्ति की माकांक्षा रखता हूँ, इसलिए तुम्हारा मंता को न चुनकर तुम अकेले को चुना। तुम्हें मरी एक भवद कर्ता होगा। तुम्हें मेरे रप का समर्थी बनना होगा। दीर्घ काल से मेरी यह तीव्र इच्छा है। तुम सारथी

बनाया

कन्या

५५





ब्रजकट साय दोगे तो हम कीरव सेना को क्या मुर जमुर भ एक हाकर आये ता उन्हें भी हरा दूंगा जिन मरी इच्छा का निरन्कार मन करो और मेरी बात मान जाओ।"

"अवश्य तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा!" कृष्ण ने वचन देकर अर्जुन को भेज दिया।

मुद्रदेश के राजा हषा मकुल, सहदेव के मामा शल्य को पांडवों का दूत द्वारा भेजा संदेश मिला वह पांडवों की सहायता करने एक अशौहिणी सेना को तथा सहारथी अपने पुत्रों को साथ लेकर निकल पड़ा। मुद्रदेश के परिधान अलंकार, वाहन, रथ बहुत ही विचित्र होते थे। महापराक्रमी शल्य उस विचित्र सेना को लेकर बीच-बीच में पांडवों डालकर विजय लेता हुआ पांडवों के पास पहुँचने निकला।

दुर्योधन को सप्तचरो द्वारा मानुस हुआ कि शल्य पांडवों की सहायता करने निकल पड़ा तो उसने शत्रु वृक्षकर वहाँ-वहाँ रखने सारां सूचिधृओं का प्रयत्न किया, वहाँ शल्य ने विश्राम लेने पड़ाव बनाये। स्वयं पड़ाव इतलवाता था और उन्हे सजाता भी था रुचिकर भोजन-पदार्थ इतलवाता था, विनोद कार्यक्रमों का आयोजन करता था जो शल्य की गाना चरों ही सुनने लगे। शल्य ने समझा कि ये सारे प्रबंध धर्मराज ही कर रहा है तो उसने एक बार कहा 'ओ इन सारी सुविधाओं का प्रबंध कर रहे हैं, उन्हें एक बार मेरे पास ले आइए जो वर सौभाग्य, उन्हें दूँगा।'

दुर्योधन तुरंत शल्य के सम्मुख आया शल्य ने उसका आग्रह किया और पृच्छा 'पुत्र, पृच्छो, तुम्हें क्या चाहिये' अवश्य दूँगा।

दुर्योधन ने कहा 'राजा, आप मंग्य सेना का नेतृत्व संभालिये' शल्य ने हाँ कह दिया और कहा 'दुर्योधन, अब तुम अपना लहर सीट चला। मुझे धर्मराज से मिलना है उससे बात करने के बाद तुम्हारे पत्नी आयेगा।'

"धर्मराज को देखकर आप तुरंत लौट आलिये। हमारी सेना आप पर ही निर्भर है" और कहकर दुर्योधन, शल्य के गले लगा और अपनी चाल की बसपायारी पर बेहद लक्ष होला हुआ दोस्तानापर चला गया।

बाद शल्य उपशान्त्य में पांडवों के शिबिर में गया धर्मराज ने अतिथि मत्सर किया। शल्य ने तबकुल सहदेव का गाल लगाया। उन सबको अपने पास बिठाकर कहा 'धर्मराज, कुशल हो? जगवान की कृपा से जनवाम सफलतापूर्वक पूरा किया उससे भी अति

कष्टदायक अज्ञानवाम में भी निरांतक बाहर आ पारो राज्य को खो देने के बाद सेना कोई कैसे सुखा रह सकता है ' कौरवों का मुँह ग हलाक और मुझी रहो। इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी तुम और तुम्हारे भाइयों को भूखों दबो यही कहत है।"

शल्य ने धर्मराज से यह भी बताया कि मार्ग मध्य में दुर्योधन ने उसकी सुविधाओं का प्रबंध कैसे कैसे किया और फलस्वरूप उगने उरा क्या वचन दिया।

धर्मराज ने मन कुछ सुनने के बाद कहा महाराज आपने जो किया, ठीक ही किया। जो संतुष्ट करत है उनकी इच्छाओं की पूर्ति करना अपने का धर्म है पर मेरा भी एक बड़ा उपकार कीजिये। आप युद्धक्षेत्र में कृष्ण के समान है। इससे कोई संदेह नहीं कि कर्ण और अर्जुन ये जब युद्ध होगा तब आपका कर्ण का सारथी बनता पड़ेगा, क्योंकि कृष्ण

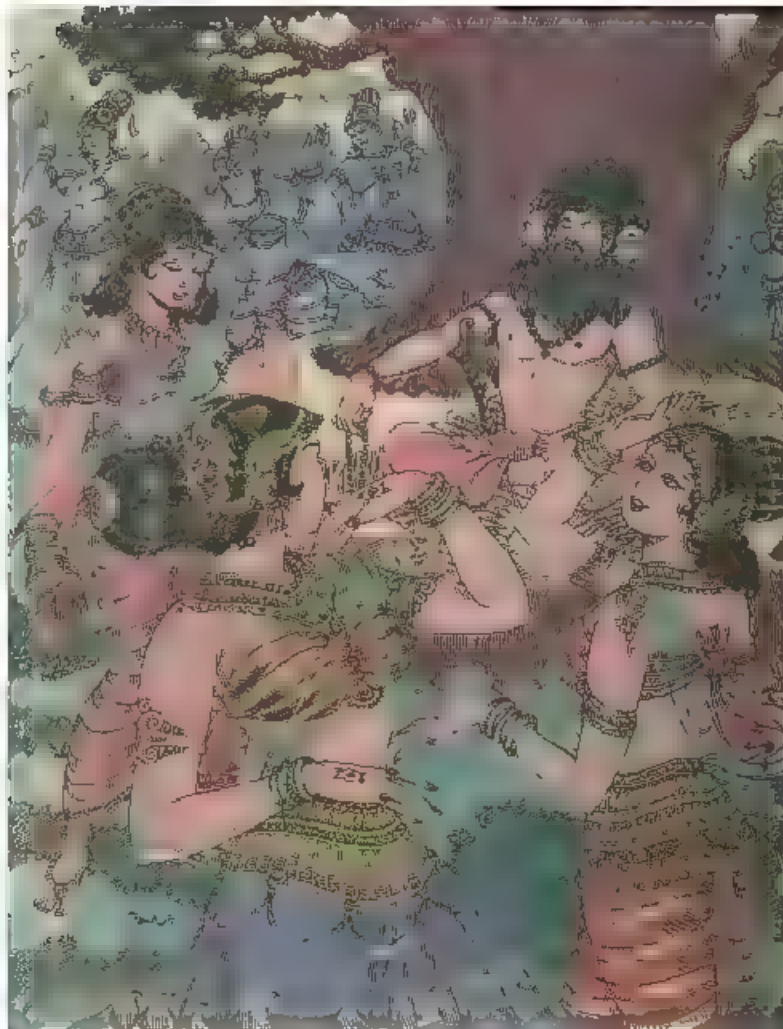
के समान का साथी तैयार मना मे कोई है तथा कर्ण का जब सारथ्य करेगा तब अर्जुन की रक्षा कीजिये कर्ण के न्याय का भंग कीजिये यही मेरी प्रार्थना है।

शल्य ने कहा "तुम चिंतित मत होना। आवश्यकता पड़ने पर उस दुष्ट कर्ण की खबर मैं लूँगा। देखूँगा कि अर्जुन की विजय हो।"

पांडव जिन कष्टों से गुजर धर्मराज ने सबका धारा दिया। उस शल्य ने संसद जैसे देशताओं के राजा को किन किन कष्टों का अनुभव करना पड़ा, सविस्तर यों बताया।

त्वष्ट प्रगापति ने इंद्र के साथे दोह करना चाहा। इंद्र को भी परास्त करनेवाले विश्वरूप नामक एक शक्ति की पूर्ति को विश्वरूप के तीन सिर थे वह तीन भिरवान् इंद्र निहानेन पाने तपस्या करने लगा, इंद्र को लगा कि उसकी तपस्या मफल होगी, वह डर गया, उसने विश्वरूप की तपस्या को भंग करने के





निराजमराएँ भेजीं। परंतु वे विश्वरूप की भक्ति में कोई परिचय नहीं ले सकीं। वे अनजान भक्तिमान् न पकाने लीं।

अब हर स्वरूप शक्ति और धर्म के ब्रह्मरूप से विश्वरूप का उद्घाटन किया। अब इंद्र का प्रयत्न हुआ था किन्तु बाद उससे भी बड़ी विपत्ति का सामना उसे करना पड़ा।

स्वयं जो जब मानस हुआ कि, इंद्र के हाथों उसका पंच सारा गया तब वह अत्यंत क्रोधित हो उठा। इंद्र का एक और शक्ति की शक्ति की जो इंद्र का मानस की शक्ति रचना है। प्रलयकाल के लक्ष्य का वह गुण प्राप्त की गात्रा पाकर स्वर्ग गया और इंद्र को युद्ध करने लगे। इंद्र ने पाप बोधे ब्रह्मरूप नहीं था। अपने इंद्र के शक्ति की परवाह नहीं की। अपने इंद्र को पकड़ा और उसे निगल डाला। पर जब इंद्र ने भ्रातृ लक्ष्य लगा, तब इंद्र किसी प्रकार बाहर आ गया और बिना युद्ध किया ही भाग गया।

इंद्र देवताओं की साथ लेकर विश्व के लक्ष्य गया और उसपर अपनी बापदाजों के लक्ष्य में अतः, इंद्र को मारने का उपाय बनाने की प्रार्थना की।

“बुद्धि जब नहीं मरेगा। पहले उससे दोस्तों बढ़ाओ” किष्क ने इंद्र को सलाह दी। तब महर्षि बुद्ध के पास गये और उससे कहा “तुम इंद्र को हरा नहीं सकते। इंद्र भी तुम्हें हरा नहीं सकता। तुम दोनों संधि कर लो और सुखपूर्वक रहो।”

बुद्ध ने महर्षियों की बातें सुनीं और उससे सुलह कर ली। इंद्र से उसने स्नेहपूर्ण संबंध स्थापित किए, दोनों एक-दूसरे का आदर करने लगे। परंतु इंद्र शक्ति की ताक में था। एक दिन शाम को बुद्ध भक्तों समूह तट पर विहार कर रहा था, तब उसे अपने ब्रह्मरूप से मार डाला।

विश्वरूप और बुद्ध को मारकर इंद्र ने पाप किया, जिससे उसकी मति भ्रष्ट हो गयी। किसी को दिसावो दिये बिना दुष्ट-दुष्ट लक्ष्यहीन हो भूमि लगा। इंद्र की इस स्थिति को देखकर किसी एक समर्थ देवता की धीज होने लगी, जो इंद्र के सिंहासन पर आसीन होने की योग्यता रखता हो। महर्षि समूह के पास गये और उससे प्रार्थना की कि वे इंद्र के आसन पर विराजमान हों और लोको पर अपना शासन चलायें।





## 'बन्दामामा' की खबरें

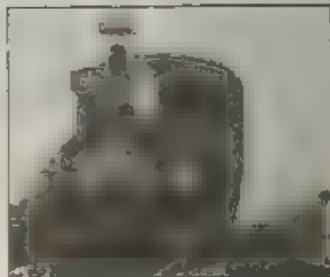
### लंबा खिलौना

बड़ा जैग हाँ किन्नौने की बातें करते हैं, हम याद आते हैं। टायरानोसॉरिक्स कंट्रोस डायनासोरों आनेवाले मोहन कोरे, रेल आदि हाथी राज विद्या खगंधा आदि खिलौने भी बच्चों को बहुत ही आकर्षित करते हैं। क्या तुम जानते हो कि बच्चों के खिलौनों में से कौन-सा खिलौना सबसे लंबा है? १९९४ में भावों के विचारियों ने ४१९ मीटरों की लंबाई के एक खिलौने का निर्माण किया। अब सिंगापुर में उससे भी लंबा एक चीनी डायन बनाया गया। विकलांगों की संक्षेप विधि के लिए, सिंगापुर एयर लैन्स के न्यूरोध पर यह खिलौना बनाया गया। 'जिमविल्स' में बना बड़ा ही लंबा 'चैन' भी सिंगापुर में ही है।

### पुराना बंधन हुआ

९५ वर्षों के पहले भारत में जब इसका प्रवेश हुआ तब इसे 'फैरी क्रीन' के नाम से पुकारते थे, रेल की पटरियों से यह हटाया गया और इस देश का शासन एवं भूजलधन स सुरक्षित रखा गया। हमारे रेल्व विभाग ने सच कहा कि क्या हमके हान बिबरी गुहा कागधी जा सकती है? हजारों को दुर्घटना किया और इस खूब संजाला वह पटरियों पर लपटा गया और दो दिनों उसके पाछे लग दिव। एक डिब्बे में बैठकर साठ यात्रा यात्र कर सकते हैं। दूसरे डिब्बे में सामान रखे जा सकते हैं। अक्टूबर में दिहा स राजस्थान के आसपास तक इस रेल का आना जाना शुरू हुआ। हमें यात्रा करने के लिए ४०० अमेरिकन डॉलर होने लगभग पंद्रह हजार रुपये बूकाने

होगे। आसपास पहुँचने-पहुँचने ही चंदे लग जायेंगे। वहाँ से यात्रा सरकारी रेल्व नेफ सांक्चरी' ले जाये जाएंगे। यह पुराना हज़न किंग कंगने में तैयार किया गया, यह कंगनी अब नहीं रही। दोष काल तक इसे उपयोग में लाने की संभावना है।



### ई.पू. चौथा शताब्दी का बुनिया का नक्शा

गोस सालों के पहले राज के पटी पर अकिता बुनिया का एक नक्शा चीन से पाया गया। फुलनस बुनिया के शास्त्रज्ञों का मानना है कि यह ई.पू. ३४० वर्षों का है। हवाई परदरा, सिंगबाद प्रदेशों का यह नक्शा अति प्राचीन है। यह २३०० साल पुराना है। इसमें नाप साफ स्पष्ट है, किन्तु अक्षरों व रेखाएँ देखाएँ दिखायी नहीं दे रही हैं।

### चाय की पत्ती की कीमत

निस्समाह के समय जब हम गरम चाय पीते हैं, लगता है कि हम फिर से तराजूज़ा हो गये। अब साधारणतया एक किलो की चाय की पत्तियों की कीमत है एक ही से एक ही पचास रुपये, डाजलिंग में उत्पन्न विशिष्ट प्रकार की चाय की पत्तियों की नीलामी हुई, इन ही में फलकने में। हर किस्म के लिए ५,००० रुपये बुकये गये, जो निर्यात हैं।

'बन्दामामा'  
परिशिष्ट  
१११

हमारे देश  
की आभाएँ

## पुष्कर मेला

पुष्कर राजस्थान का एक छोटा सा शहर है। अपने अनूठे मंदिरों के लिए यह सुप्रसिद्ध है। उठों की जात यहाँ हरे मान लगती है। कार्तिक पूर्णिमा के पंद्रह दिनों के पहले से ही उठों का झुंड यहाँ पहुँच जाते लगते हैं। जेठों का राज्या जाता है और उन्हें पदार्थियों में विश्रया जाना है। वरुन बड़े पैमाने पर यहाँ उठों का क्रय



त्रिकर होता है। उठों की दौड़ की प्रतियोगिता भी यहाँ चलायी जाती है।

सत्राथे गंध वनस्पत दोहरा पर लटकाये जानवाले सामान राय देवता आराधन यहाँ आनेवाले पर्यटकों का विशेष रूप से स कार्शन करते हैं। बड़ी ही बारिकी में बने कार्पेट शिन्धा, सुंदर काली व धातु के केशनों से चटाइनों के लिए भी जल हाट प्रसिद्ध है। उठों के काम में बनाये गये लाल पुष्प व हरे रंगों की झोकायी लगे थोडम बड़े ही आकर्षणीय होते हैं। उठों की महारत लिये विलास व सस्पा जगों से तैयार की जाती है। ये सब इस बात के गवाह हैं कि यह निराला हाट है। जगत में आनीक खेनवाला के लिए यहाँ आवश्यक वस्तु किये गये हैं। यहाँ कठपुतलियों का खेल नाटक, गान तथा पदशन आदि सा भी इतजाम है।

परमपूज्य के राज्य

## मरुत्त

महंत तमिक राजा जड़े ही बिबिप्रक थे  
मरखिल की कुपा से उन्हें हिंसायनों में मोने के  
विषय प्राप्त हुए, उन्होंने यज्ञ करने का संकल्प  
लिया, वेदमंत्रों से नव यज्ञ संपन्न हो गये था, तब  
कौन्पिनि रावणसुत बड़ी आयु, १० वीं शी राजा  
साकेत आता, युद्ध के बह तबे लत्कायना था। श्री  
शुक जावे, उन्हें यह छोड़ देना या नहीं और नही  
करने मन्त्रद हो जाते प अनेम तदकर जाते हग  
देते थे प १३ र्तिता जोकां म अपना अभिप्राय  
मना गृह था तदश्व गृह शर्मित कर गृह का कि  
नीचें नका प अस्की बराबर ६१ आयु है तही  
राजा महन की प्रशंसा से जाया और उसे बराबर  
१ हक गृह म्हा नो प्रसन्न पद करा

युद्ध लोभकान् को भुक्तं बद्धं च स्थितं देवता  
मवत गये न मन्त्रेण परिधायेण च तेषां वा कुर्यात्  
भारम कुर्यात् और जात्रा दूर खड़े हो गये । ये पक्षी  
छड़ लोके लड़े । भ्रातृत्वा से देखने लगें वे देखना  
चाहते थे कि उन्हें अब क्या होगा

भरुत न पला तुम कोन ही ?

राजपणमय ने कहा, 'यह सच नहीं जानते कि मैं कौन

[illegible]

आज का प्राजित करक अपन को पराक्रमी  
घोषित कर रह हों इतना अहंकार यह तो नज्वा की  
लानत है मैं तुम्हें अभी यही वमरज के पाश में कुंआ  
करते हूँ मरने में धनंध अपने हाथ में लिया

उसके धर्म की देखने लूए राजन मानिन ए  
मया भूखे भ्रात्र कत निमिने मने येनराकी को  
नही देवा जल न भाष एक ऐमा मइल नही  
किया सोने जे पुढे काने के विरा सलत नही  
सरो तब संवर्षक मनि ए राजन मने की सलत पु  
कहा यो करे सयम योदिक को कोउ अथव  
बादरा का यान तीन ए। शक्ति मे जावना के  
चवौनन मइत तूने के का मने किया अत तुम  
पारोजन मइत जाओगे

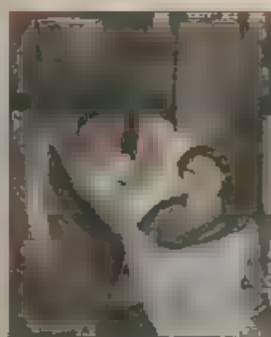
मरुत ने भुनग नीचे गिरा दिया।

वही अपारख्येन अमरीं तं शुभ क्षत्र ने नवण न  
ह सकल ने धनुष नीने गिरा दिया स्वप्ना पद  
है हकी नि नमही किगो हा '

नवकण गन्तव्य है और वहाँ रां चलनी पिय ।

महत्त का यह विश्वपर्वक पूर्ण हुआ अपने  
वन काल में चयोन में लाने के बाद जो भला  
गया उसने उसे हिमालय पर्वतों में छिपाया  
गर्जन वह सोना छर्पराज के घर में चयोन में  
गया गया

## समाचार पत्र



\*मिथिल वार छड़ड़ा, नव व पञ्चा में इन समाचार पत्रों के प्रति आसक्ति बढ़ने लगी । तब तब अमेरिका में लगभग ७५ पत्रिकाएँ प्रकाशित हो चुकी ।

क्या तूम जानते हो?

इ पू पीचवां शताब्दी में जो पत्रा राजधानी रोम नगर से दूर रहती थी उन्हें राजधानी से संबंधित समाचारों की जानकारी पत्रों द्वारा दी जाती थी। ई पू के मध्यम वर्ष ३ क्रिस्तिस पूर्व ३४ ई ३५ पत्रांत का कामबद्ध किया। उसकी सरकार की पोसा हू एडम २९ पत्रांतकित करती थी व री पापस हू एडम (नियत पत्रां पत्रांतक) कछेयें वर्तमान हमारे समाचार-पत्रों के समान की नै पृथक् पत्रिका २६६३ ई लंदन में "हैलसजेम" के नाम से प्रकाशित हुई। अमेरिका के वाशिंग नगर में "पब्लिक अफेयर्स" १६६९ में प्रकाशित होने लगी अमेरिका में जब से

## इंद्रधनुषः

## हिलते पृष्प

[illegible]



## स्वतंत्रता की स्वर्णजयंती के अवसर पर 'चन्नामामा' की भेंट प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम ५



भारत व विभिन्न भागों में क्रमशः परचे शासकों के विरुद्ध आतुरता की भावना प्रबल होना लगी। कानपुर के विद्रोह के उपरान्त सारनामहेत अंग्रेजों को प्रेरित हुए। इस घटना ने सामान्य जनश्रेणियों और पेशवाओं को प्रेरित किया। उन्होंने अपने राज्य की स्वतंत्रता घोषित किया जो ईश्वर इच्छा के अनुसार के अधीन था। लक्ष्मीबाई ने चन्नामामा भी दी कि अंग्रेजों सेना तुरंत आतुरता के जिले में प्रवेश करे। परंतु ब्रिटिश अधिकारियों ने उसकी चेतावनी को पर्याप्त नहीं की। आतुरता की प्रकाश ने किन्हीं घर धोखा बोल दिया और सैनिकों को मार डाला। (—सारा—)

सैन्य का समय था। मुस्लिम मजहब का एक फकीर अपने ही अनुयायियों के साथ पूरब की ओर तेजी से आगे बढ़ते गये। हिन्दू धर्म का एक साधु अपने शिष्यों को लिये हाथी पर वासीन होकर सामने से आ रहा था। दोनों का आमना-सामना हुआ। साधु का देवता ही फकीर ने अपना हाथ उठाकर कहा 'दोस्त, दोस्त' साधु ने उसी प्रकार हाथ उठाकर कहा 'भूम, भूम'।

फकीर ने मुस्कुराते हुए फिर से हाथ हिलाया। साधु हाथ से उत्तरा। दोनों गले मिले। दोनों ने अपने अनुयायियों को वहीं ठहराने के लिए कहा और पास ही की एक पहाड़ी पर जाकर दीर्घ चर्चाओं में निमग्न हो गये।

क्या दोनों ने अपने धर्म के संबंध में आपस में चर्चा की? नहीं। परचे शासकों के विरुद्ध जंग लड़ने के लिए यज्ञ को दोनों

ने बताया, उन्हें प्रेरणा दी। दोनों का एक ही नकब था। उन दोनों ने आपस में इसी विषय को लेकर चर्चा की। साथ ही इस दिशा में अपने अपने अनुयायियों, हार जीत आदि पर बहुत देर तक बातें करते रहे। साथ ही वे एक दूसरे से बताते रहे कि किन-किन राजाओं में वे मिले किन किन संस्थानों के अधिकारियों से उन्होंने चर्चा की, किन किन प्रमुख व्यक्तियों का संदेश भेजे, किन किनको उन्होंने सहायता पहुँचायी और किन किन को बचल विदे और किन किन से बचल लिये। अपने अपने बगले तारतम्यों पर भी दोनों ने प्रकाश डाला। उनकी बातचीत का सार यही था कि उन्होंने देश में अंग्रेजों को निकालने के लिए अब तक क्या क्या प्रयत्न किये और भविष्य में उन्हें क्या क्या करना

चाहिये।

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध हिन्दु मुसलमानों ने एक होकर लड़ाई लड़ी। अपने बीच मतभेद आने नहीं दिया। मजहब या धर्म को लेकर उनमें जगह नहीं हुए। उनकी एकता दुर्भेद्य थी। यद्यपि उनके पहनावे अलग थे नाम अलग थे, समाज की प्रार्थना की उनकी पद्धतियाँ अलग-अलग थी, परंतु दोनों ने इस मन्त्र को नहीं भुलाया कि दोनों भारतीयों की सत्ता है। यह भावना दोनों में गम्भीर रूप से भर कर गयी। उन्होंने अपने अनुयायियों से भी बारंबार बताया कि तानाशाहों और अविमुक्तों अलग अलग धर्मों के हैं, पर सगे भाईयों की तरह एक होकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे हैं। और हमें भी इसी एकता के सूत्र में जँझकर देश की आज़ादी





में मूक करना है।

अजिमुल्लाखान सूधमगाही व पञ्चे राकनीतिज्ञ थे। अंग्रेजी व फ्रेंच भाषाएँ वे अच्छी तरह जानते थे। वे नानासाहेब के प्रतिनिधि बनकर इंग्लैंड गये। वहाँ उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों को यहाँ की परिस्थितियों, भारतीय जनता के संप्रदायों, विश्वासों व अभिप्रायों पर तथाकथित प्रकाश डाला। परंतु वे अपना लक्ष्य साधने में सफल नहीं हो पाये। अपने कई अनुभवों के आधार पर वे इस दृढ़ निश्चय पर आये कि कंपनी को भारत से भगाना ही एकमात्र उपाय है।

मातृभूमि पहुँचने के बाद अजिमुल्लाखान, नानासाहेब से मिले। दोनों ने जगह-जगह पर रहस्यपूर्वक क्रांति-संघों की स्थापना

की, देश के अन्य नेताओं को दूरों द्वारा संदेश भेजे। ये दोनों ने सक्रिय रूप से स्वतंत्रता के इस आंदोलन में भाग लिया।

कानपूर की विमुक्ति और नानासाहेब के राज्याभिषेक ने कंपनी की पतिका को तीव्र रूप से आघात पहुँचाया। नाना साहेब की गद्दी से उतरना अब कंपनी का एकमात्र ध्येय बन गया। ब्रिटिश सरकार ने इस काम के लिए हेपलाक नामक जनरल को सेनाध्यक्ष बनाकर भारत भेजा। हेपलाक को यह खबर मिल गयी कि कानपूर के समीप के नदी तट पर ब्रिटिश अधिकारी व सैनिक बड़ी ही निर्यत्ना से मार डाले गये। कानपूर की जनता को सबक सिखाना ही अब उसका एकमात्र ध्येय था। हजार ब्रिटिश सैनिकों, व हजारों भारतीय सिपाहियों को लेकर उसने कानपूर पर हमला कर दिया। मार्ग-मध्य में ही उनके पैशाचिक कार्यों का प्रारंभ हो गया। उसने ग्रामों को सिर्फ लूटा ही नहीं, बल्कि उन्हें जला भी डाला। जो भी भारतीय सामने आता था, हिचकिचाए बिना उसे मार डालता था।

फतेहगढ़ शहर के पास जब पहुँचा तब उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि शहर में घुस जाओ और लूट लो। लूटने के बाद उसने वहाँ की जनता को जबरदस्ती घरों में बंद कर दिया, बाहर से ढाले लगा दिये और घरों में आग लगा दी।

नानासाहेब को समाचार मिल गया कि हेपलाक के सैनिक कानपूर की तरफ बढ़ आ रहे हैं। उन्हें इसकी भी जानकारी मिली कि मार्ग-मध्य में कितनी बर्बरता के

साथ वह पैदा आया। तब नानासाहेब के कई श्रेयोभिनायिकाएँ ने उन्हें सलाह दी कि वे तुरंत कानपूर छोड़कर चले जाएँ और मौला देखकर ब्रिटिश सैनिकों पर धावा चोल दें। किन्तु नानासाहेब ने शत्रुओं का दृढ़तर मुकाबला करने का निर्णय किया। उन्होंने उनसे कहा “हो मकता है, हमारी हार हो। पर इस युद्ध में शत्रु के कुछ सैनिकों को मार तो सकते हैं। वह भी हमारे लिए उपयोगी ही सिद्ध होगा।”

इस बीच हेपलाक की सेना कानपूर के निकट पहुँची। नानासाहेब ने स्वयं नेतृत्व संभाला। नानासाहेब की सेना जैसे ही आगे बढ़ने लगी, हेपलाक की सेना पीछे हटती गयी। यह हेपलाक का केवल युद्ध-व्युत्तर था। सेना दो दुबलों में बंटी और नगर की दायीं तरफ व बायीं तरफ से एकसाथ कानपूर पर हमला कर दिया। नानासाहेब इस आकस्मिक घटना की कल्पना नहीं कर सके। इस आकस्मिक परिणाम को देखते हुए सैनिकों में खलबली मच गयी। फिर भी नानासाहेब ने अपना धैर्य नहीं खोया। उन्होंने सैनिकों को फिर से इकट्ठा किया और ब्रिटिश सेना पर टूट पड़े। ब्रिटिश सैनिक युद्ध-विद्या में प्रशिक्षित थे। अलावा इसके, उनके पास थोड़े बाइब की सामग्रियाँ थी। इस कारण से नानासाहेब की सेना शत्रु सेना के सामने टिक न सकी। उन्होंने नानासाहेब की सेना का सर्वनाश कर दिया।

बंदूकों की आवाजों, सैनिकों की चिल्लाहटों व रोने-धोने से वातावरण गूँज उठा। अंधेरा चारों दिशाओं में फैल रहा



था। हेपलाक ने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि नानासाहेब ढूँढ़े जाएँ और पकड़े जाएँ। उन्होंने उन्हें शवों व घायल सैनिकों के बीच ढूँढ़ा। पर वे कहीं दिखायी नहीं पड़े। घरों में भी दूँडा, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। फिर थोड़ी देर बाद हेपलाक को मालूम हुआ कि अपने कुछ अनुयायियों के साथ नानासाहेब भाग गये और जाले-जाले सोता व धन भी लेते गये।

हेपलाक निराश हुआ। उसके क्रोध का पारा बड़ गया और वह दण्ड प्रतीकार लेने पर तैयार गया। उसने हजारों ब्राह्मणों को कैद किया। उनमें से पंडित, गुरु, पुजारी व प्रमुख थे। उनके हाथ मरोड़ दिये गये और जबरदस्ती सबके सब कंपनी के किले में लाये गये। कंपनी के किले के



प्रांगण की भूमि पर रक्त के छब्बे थे। वह ब्रिटिशवालों का रक्त था। कैदियों को आदेश दिया गया कि वे ज़मीन पर लेट जाएँ और अपनी जीभ से उसे साफ करें। उन्हें उसके आदेश का पालन करना ही पड़ा। इस प्रकार उन्हें अपमानित करने के बाद हेपलाक ने उन्हें रिहा नहीं किया, उन सबको मरवा डाला।

वीलर की मृत्यु का बदला लेने के उद्देश्य से ही अनरल हेपलाक ने मासूम प्रजा को बहुत सताया, उनपर घोर अत्याचार किये। स्थानीय प्रजा को शूनी पर चढ़ाया। फिर भी कुछ क्रांतिवीरों ने उस स्थिति में भी असमान धैर्य दिखाया। अपने सिद्धांतों व अपनी मातृभूमि के प्रति उनकी सक्ति-श्रद्धाओं का यह ज्वलंत संराहरण है।

एक सज़न नानासाहेब के शासन-काल में व्यापारधीश थे। उन्हें कैद किया और भीत की सज़ा सुनायी गयी। उस व्यापारधीश ने सज़ा सला की परवाह ही नहीं की। उन्होंने ऐसा व्यवहार किया, मानों वह सज़ा वे स्वयं चुगत नहीं रहे हों बल्कि कोई और चुगत रहा हो। वे वध्य-स्थल की तरफ बढ़ी ही

निहरता से पाग भरते हुए आगे बढ़े। उन आदमियों को देखकर भी थोड़ा भी वे नहीं प्रचुराये जो उन्हें मृत्युलोक पहुँचाने तैयार खड़े हैं। उन्हें देखते हुए लगता था, तमाम्बि-स्थिति में पहुँचे योगी हों। उन सज़न को लगा, मानों वे पाखांडियों के चंगुल से विमुक्त हो रहे हों और एक ऐसी स्थिति की तरफ बढ़ रहे हों, जो उन्हें स्वार्थिक सुख प्रदान करेगी। कानपुर को पुनः अपने अधीन करने पर कंपनी के शिबिरों में गानंद उमड़ पड़ा। किन्तु इतने ही में उन्हें सप्ताचार मिले कि ककावटों व विपत्तियों के बादल घिरे आ रहे हैं। दिल्ली नगर अशांत है। लखनऊ में खलबली मची हुई है। बिहार में वहाँ-वहाँ विद्रोह हो रहे हैं।

भारत देश तथा इंग्लैंड में भी अंग्रेजों में यह संदेह उत्पन्न होने लगा कि और कब तक कंपनी अपना शासन जारी रख सकेगी? उनके संदेह का आधार भी था। परार्थों के शासन को हटाने में भारत के राजा अगर एकता बरतते तो सिपाहियों का विद्रोह भारत को स्वतंत्र बनाने में सफल होता, पर ऐसा नहीं हुआ।

संशोध



## खीर से हुई बदनामी

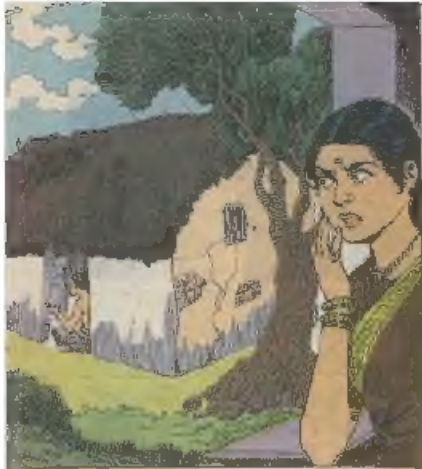
चमन उस गाँव का रहस था। उसने खुद बहुत कमाया और उसके पिता भी बड़ी गंपत्ति छोड़कर गया। परंतु वह एकदम कंजूस था। किन्तु वह राज गाँववालों को मालूम नहीं था। सब यही कहते रहते थे कि वह बहुत बड़ा आदमी है और किसी दूसरे को साथ बिठाये बिना खाता ही नहीं। चमन गाँववालों से बहुत ही कम मिलता था। पर जब कभी भी मिलता, उगने अपनी उदारता के बारे में लंबी-लंबी बातें करता रहता था। वह उनसे कहता रहता कि अतिथि का स्वागत-सत्कार करने में उसे बड़ा आनंद आता है। लोगों ने उसकी बातों का विश्वास किया और समझते रहे कि चमन बहुत ही उत्तम मनुष्य है। वह गाँववालों से बहुत ही कम मिलता इसलिए था कि उसे डर था कि गाँववाले कहीं उससे कोई सहायता मांग बैठें और वह न दे तो उसका भ्रांटा फूट जायेगा।

हर दिन दुपहर को खाने के पहले वह अपने घर के बाहर के दरवाजे के पास खड़ा हो जाता था और कहता रहता था "मेरे साथ भोजन करने का कोई अतिथि नहीं है?" पर गली में कोई साधु-सन्यासी दिखाई पड़ता तो चमन चुपके से अंदर चला जाता और दरवाजा बंद कर लेता था। गाँववालों को भ्रम में बालने के लिए उसका यह नाटक मात्र था।

रामू नामक एक गरीब काम दूढ़ते हुए पत्नी समेत उस गाँव में आया। उसे मालूम हुआ कि चमन बहुत ही उदार आदमी है और उसके यही निश्चित रूप से नौकरी भी मिलेगी। रामू ने सोचा, ऐसे उदार तख्त के यहाँ नौकरी मिलेगी तो जिन्दगी बाराग से कट जायेगी। नौकरी दूढ़ते हुए किसी और गाँव में जाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।

रामू चमन से मिला। उसने कहा

एक ही वरस हुई 'बन्नाबाग' में प्रकाशित कृतानी



"यजमान, मुझे और मेरी पत्नी को वापस काम देंगे तो हम आपके बड़े आभारी होंगे। आपके दिए बेतन से अपना पेट भर लेते और जब तक जिन्दा रहेंगे, आपकी सेवा करते रहेंगे।" उस समय चमन के साथ चार-पांच आसामी बैठे हुए थे। उसे हर या कि 'म' कहें तो बेझुबानी होगी, इसलिए उसने रामू और उसकी पत्नी को नौकरी पर रस लिखा। परंतु उसने यह नहीं बताया कि उनका क्या बेतन होगा।

चमन के घर के पीछे उजड़ी एक झोपड़ी थी। उसी झोपड़ी में रहने लगे, रामू और उसकी पत्नी। रामू घर का और बाहर का काम संभालता था। उसकी पत्नी झाड़ू देती और घर साफ करती थी। दोनों से चमन सब काम लेता था पर बेतन बहुत ही कम

देता था। वह बेतन रामू और उसकी पत्नी को पेट भर खाने के लिए भी पर्याप्त नहीं होता था। इसलिए वे हर रोज थोड़ा-सा नमक मिलाकर मांझ पी लेते थे।

चमन के घर में किसी भी दिन खाद्य परापूर्व बचता ही नहीं था। चमन की पत्नी उतना ही पकती, जितना उन्हें चाहिये।

"यह बेगारी कहीं किसी और जगह पर करेंगे तो पेट भरने मात्र के लिए कोई न कोई काम मिल ही जायेगा। वहां से हम चले जाएंगे।" रामू की पत्नी कहा करती थी।

रामू भी चाहता था कि चमन की नौकरी छोड़ दें। परंतु वह चाहता था कि चमन के पहले चमन को स्वयं सिवाड़े और फिर चला जाऊँ।

अब चमन पर वह अपना ताराजी उतारता था, कुछ और ही तरह से। जब-जब वह चमन के पास, कहता "अरी, खीर बना दो? जल्दी ले आओ तो सही। शकर थोड़ा ज्यादा ही डालना। दो हरे केले भी लेती आना।" वह भी चिड़हाता रहता था। वह चाहता था कि वे बातें चमन के कानों में पड़ें। उसकी पत्नी गांव में थोड़ा और नमक डालती और दो-तीन मिर्चों के साथ बरतन उसके सामने रखती।

हर रोज रामू की ये बातें चमन की पत्नी सुनती रही। उसे खीर बहुत पसंद थी। परिवार बसाने समुदाय आने के बाद आज तक खीर खाने की बात तो दूर, उसका गंध भी उसने नहीं सूँघा। हरे केले खाना तो उसका सपना मात्र बनकर रह गया।

अबसे रहा नहीं गया। उसने रामू की खीर

की बात अपने पति से बतायी। चमन को भी बहुत आश्चर्य हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि इतना बड़ा बेतन पाते हुए भी बेइतमि खीर व केले कैसे खा पा रहे हैं। वह रामू से पूछकर विषय जानने आतुर हो गया।

दूसरे दिन रामू जब काम पर आया तब चमन ने उससे पूछा "तुम्हें किसी बात की कमी नहीं है न?"

रामू ने कहा "हमारी जिन्दगियाँ बिना किसी कमी के कटेंगी कैसे मालिक?"

"यह क्या। रोज खीर व केले खाते जा रहे हो और यह दीन रोदन कैसा? क्या समझते हो कि यह बात मुझसे छिपी है?" चमन ने कहा।

"अच्छा उसकी बात कर रहे हैं आप? मालिक, वे ही हमें आसानी से मिलनेवाली चीजें हैं। तब जो खीर खाते हैं, मेरी पत्नी बहुत अच्छा बनाती है।" रामू ने कहा।

"तो इसका मतलब हुआ कि खीर बनाने में ज्यादा खर्च नहीं होता?" चमन ने पूछा।

चंद दिनों बाद चमन की बंटी को देखने के लिए पास ही के गाँव का रईस, उसका बेटा अपने दस-पंद्रह दोस्तों के साथ उसके घर आये। उन सबको एकसाथ देखकर चमन घबरा उठा। इन सबको स्वादिष्ट भोजन खिलाना ही होगा। उसे लगा कि जन्म खर्चों से शायद बच जाएँ, पर इस खर्च से बचना असंभव है।

चमन को अचानक एक उपाय सूझा। उसने रामू को बुलाकर कहा "अरे रामू, बाजार जाओ, खीर बनाने जो-जो पदार्थ चाहिये, खरीदकर ले आओ। हरे केले भी



खरीदकर ले आना। खीर अपनी पत्नी से ही बनवाना। याद रखना, जितना कम खर्च हो, उतना अच्छा है।"

अब रामू को चमन को सबक सिखाने का मौका मिल गया। वह बाजार में थोड़ी-बहुत चीजें ले आया। पत्नी के काम में चुपके से कुछ बताया और अतिथियों के लिए भोजन बनाने उसे भेज दिया।

अतिथियों ने दुल्हन को देखा और फिर इधर-उधर की बातें करने के बाद भोजन करने बैठ गये।

चमन की पत्नी भोजन परोसने अतिथियों के सामने जाने से शरमायी। उसने वह काम भी रामू की पत्नी को ही सौंपा।

चमन ने रामू की पत्नी को आज्ञा दी "पहले सबको खीर परोसो" वह मांड, नमक



और मिर्ची परोसती जाने लगी। अपने पत्ते में परोसे गये पदार्थों को देखकर दुल्हे के पिता परधाम का चेहरा नाराजी से एकदम लाल हो गया।

परोसने का काम पूरा भी नहीं हुआ कि हलने में अतिथियों के क्रोध से तमतमाये चेहरों को देखकर चमन ने पूछा "क्यों समझीजी, क्या सोच रहे हैं? यह खीर है। आपके लिए खाल तौर से बनवायी है मैंने। ठंडा पड़ जाने के पहले ही खा लीजिएगा। नहीं तो रुचिकर नहीं होगा।"

परधाम नाराज होते हुए उठ खड़ा हो गया और कहा "कैसे आदमी हो। हमारा अपमान करने की तुम्हारी यह हिम्मत। मांड परोसा और इसे खीर बना रहे हो? क्या हम नहीं जानते कि खीर क्या होती है, कैसी होती है? अच्छा हुआ, विवाह के पहले ही हमें मालूम हो गया कि तुम कैसे आदमी हो? तुम्हारे पास संपत्ति भरी पड़ी हो, क्या लाभ। तुम अक्बल दुर्जे के कजूस हो। मोठी-मोठी बातें करके दूसरों को धोखा देते रहते हो। तुम जैसे आदमी से रिश्ता जोड़ना महापाप है।" कहते हुए उसने अपने सब बादमियों

को उठ जाने के लिए कहा और तेजी से सबके साथ चला गया।

पहलाच क्षण भर में मौन भर में आग की तरह फैली। चमन रामू और उसकी पत्नी से बहुत ही नाराज हो उठा। उसने रामू को फटकारते हुए कहा "अरे नीच, अपनी पत्नी से खीर बनाने को कहा तो मांड बनवाया! उसे परोसकर तुमने मेहमानों के सामने मेरी बेइज्जती की। तुम्हारी यह हिम्मत!" कहकर वह चिढ़ाने लगा।

वहाँ जमे सबों ने विषय जाना। रामू ने घबराये बिना धीरे-धीरे कहा "क्या आप जानते नहीं, दरिद्र के लिए मांड हो खीर है। आप जो वेतन देते हैं उससे क्या मांड नहीं हो खीर थोड़े ही का सकते हैं। आपने कैसे सोचा कि इतने कम वेतन में हम खीर आ सकेंगे? आपने कहा कि हम रोजमर्रा जो खीर खाते हैं, वही खीर बनवना। जैसे आपने कहा, मैंने किया। इसमें हमारी क्या गलती है?"

चमन को लगा मानों उसका सर कट गया। वह कुछ और बोल न सका। किन्तु राम ने चमन को जो पाठ सिखाया, गाँववालों ने उसपर उसे बघाई दी।

## आवश्यकता से अधिक अकलमंदी

परमेश रंगनाथ का अकलील बेटा था। उसने उसे बड़े लाट-प्यार से पाला-पोसा। परमेश अबकला था कि मैं बहुत ही अकलमंद हूँ और मुझे पढ़ने-लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। यथापि उसे पढ़ने पर जोर देता हो वह अपने पाक-चातुर्य से उसे चुप कर देता था।

एक दिन जब वह बेकार इधर-उधर घूमकर घर लौटा तो रंगनाथ ने अपने बेटे को गाना गी और कहा "पढ़ोगे नहीं ही कैसे बीओगे? जिन्होंने कैसे सीखाओगे?"

"मुझे बेकार गाना लग्यो। जगते हो, कितानों से ज्यादा अकलमंद होते हैं बेटे। परमेश ने गाना गी कर कहा।

"कैसे?" रंगनाथ ने पूछा।

"अगर मैं साबित करूँ कि मैंने पितृओं से ज्यादा अकलमंद होते हैं तो भविष्य में कभी भी मुझे पढ़ने के लिए तैयार नहीं। मेरी यह शर्त मान लीजिए तो बताईया" परमेश ने कहा।

"अच्छा, बताता" रंगनाथ ने कहा।

"मेवमदेश काव्य की रचना किमने की?" परमेश ने पूछा।

"महाकवि कालिदास ने" रंगनाथ ने उत्तर दिया।

"रघुवंश?" परमेश ने पूछा।

"कालिदास ने ही" रंगनाथ ने कहा।

"कुमारसंभव" के रचयिता कौन थे?" परमेश ने पूछा।

"कालिदास ही उस काव्य के भी रचयिता थे" रंगनाथ ने कहा।

परमेश ने हँसते हुए कहा "देख, उन सब काव्यों के रचयिता कालिदास ही थे। अब बताओ कि उनके पिता के काव्य क्यों रच नहीं सके?" कहता हुआ वह बहुत से बला गया।

रंगनाथ की समझ में नहीं आया कि अपने बेटे की आवश्यकता से अधिक अकलमंदी पर होना चाहिए या गैर चाहिए।

